mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-29 अंक-110 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

23 अप्रैल 2025 बुधवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

अफगान महिला ... @ पेज 7

आतंकियों ने कलमा पढ़ने को कहा, फिर मारी गोली, पहलगाम की रूह कंपा देने वाली कहानी

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुई आतंकी वारदात की पूरे देश में निंदा हो रही है। मंगलवार को आतंकियों ने पर्यटकों को निशाना बनाकर, उनसे धर्म पूछकर उन्हें मौत के घाट उतार दिया। इस आतंकी घटना में अब तक करीब 26 लोगों की मौत हो

- **आतंकी घटना में अब तक करीब 26 लोगों की मौत**

चुकी है। वहीं, बड़ी संख्या में लोग घायल भी हैं। अब इस आतंकी घटना से जुड़ी एक रूह कंपा देने वाली कहानी सामने आई है। यहां एक शख्स को मारते वक्त आतंकियों ने शख्स को कलमा पढ़ने को कहा। ऐसा न करने पर आतंकियों सिर और शरीर में तीन गोलियां मारी। पहलगाम में हुए आतंकी हमले में पुणे के एक व्यवसायी

संतोष जगदाले को भी गोली मारी गई है। उनकी बेटी ने इस खौफनाक वारदात का दर्द बयां किया है। व्यवसायी की बेटी ने बताया कि उनका परिवार डर के मारे एक तंबू के अंदर छिपा हुआ था। तभी आतंकियों ने संतोष जगदाले से बाहर आकर कलमा पढ़ने को कहा। जब वह ऐसा नहीं कर सके, तो आतंकियों ने उन्हें तीन गोली- एक सिर में, एक कान के पीछे और एक पीठ में मारी। आतंकियों ने बगल में लेटे उनके भाई पर भी हमला किया और उनके पीठ में कई बार गोली मारी।

मृतक की बेटी असावरी ने बताया- जब गोलीबारी शुरू हुई तब हम पहलगाम के पास बैसरन घाटी में हम 5 लोग थे जिनमें मेरे माता-पिता भी शामिल थे। वह, उसकी माँ और एक अन्य महिला रिश्तेदार बच गई और सुरक्षाबलों ने उन्हें पहलगाम क्लब में पहुँचाया। असावरी ने बताया कि उन्हें नहीं पता कि उनके पिता और चाचा इस हमले में बचे हैं या उनका निधन हो गया।

मृतक की बेटी ने बताया कि पहाड़ी से उतरते हुए आतंकियों ने पुलिस के जैसे कपड़े पहने हुए थे। उन्हें देखते ही सभी तंबू में भाग गए। यहां 6-7 अन्य पर्यटक भी पहुंचे। सभी गोलीबारी से बचने के लिए जमीन पर लेट गए। लोग यही समझ रहे थे कि आतंकवादियों और सुरक्षाकर्मियों के बीच गोलीबारी चल रही है। आतंकवादियों का समूह पहले पास के एक तंबू में आया और गोलीबारी शुरू की। इसके बाद फिर वो इस तंबू में आए और संतोष जगदाले से बाहर आने को कहा। असावरी के मुताबिक, आतंकियों ने उनके पिता से एक इस्लामी आयत (शायद कलमा) पढ़ने के लिए कहा। जब वह ऐसा नहीं कर सके तो आतंकियों ने उन्हें तीन गोलियां मार दीं। असावरी के चाचा को आतंकियों ने चार से पांच गोलियां मारी। मौके पर मौजूद कई अन्य पुरुषों को भी गोली मारी गई। हमले के दौरान घटनास्थल पर मदद के लिए कोई पुलिस या सेना नहीं थी। सभी करीब 20 मिनट बाद पहुंचे।

संक्षिप्त समाचार

पहलगाम आतंकी हमले पर डोनाल्ड ट्रंप और व्लादिमीर पुतिन की आई प्रतिक्रिया, फ्रांस ने भी जताया दुख

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू और कश्मीर के पहलगाम में बड़ा आतंकी हमला हुआ है। आतंकियों ने पर्यटकों के समूह को निशाना बनाया है। इस जघन्य आतंकी हमले में अब तक 26 लोगों की मौत की पुष्टि हुई है, जिसमें दो विदेशी और एक स्थानीय नागरिक हैं। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह श्रीनगर पहुंचे हैं। टूरिस्टों

पर हुए हमले को लेकर देशभर में शोक की लहर है। वहीं, इस जघन्य आतंकी हमले पर अन्य देशों के दिग्गज नेताओं ने भी गहरा दुख जताया है। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले को लेकर भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को संवेदनाएं व्यक्त की हैं। राष्ट्रपति पुतिन ने अपने संदेश में कहा, ÷मान्यवर श्रीमती राष्ट्रपति, मान्यवर श्री प्रधानमंत्री, कृपया पहलगाम में आतंकवादी हमले के दुखद परिणामों पर मेरी हार्दिक संवेदनाएं स्वीकार करें, जिनके शिकार नागरिक हुए, जिसमें विभिन्न देशों के नागरिक भी थे। इस जघन्य अपराध की कोई भी न्यायोचित व्याख्या नहीं हो सकती। हम उम्मीद करते हैं कि इसके आयोजकों और अपराधियों को उनके किए की सजा मिलनी चाहिए। मैं एक बार फिर से भारत के साथ आतंकवाद के सभी रूपों और अभिव्यक्तियों से लड़ने में सहयोग बढ़ाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करता हूं।

फीमेल स्टाफ को जबरन टॉयलेट में लेकर घुस गया लड़का

सिंगापुर (एजेंसी)। विमान में केबिन क्रू (चालक दल) की महिला सदस्य के साथ छेड़छाड़ के आरोप में भारतीय युवक को सिंगापुर में गिरफ्तार किया गया है। आरोपी को 22 अप्रैल को अदालत में पेश किया जाएगा।जानकारी के अनुसार, 28 फरवरी

को दोपहर 12 बजकर पांच मिनट पर महिला ने पुलिस की सूचना दी। पुलिस के अनुसार, प्रारंभिक जांच में सामने आया कि महिला केबिन क्रू सदस्य एक महिला यात्री को शौचालय की ओर ले जा रही थी, तभी उन्होंने जमीन पर टिश्यू पेपर का एक टुकड़ा देखा। जब वह उसे उठाने के लिए झुकी, तभी 20 वर्षीय आरोपी उनके पीछे आया और उन्हें पकड़कर जबरन शौचालय में घुस गया। टॉयलेट में पहले से मौजूद महिला यात्री ने महिला क्रू सदस्य को बचाया और उसे शौचालय से बाहर निकाला। घटना की सूचना केबिन सुपरवाइजर को दी गई और विमान के सिंगापुर के चांगी हवाई अड्डे पर उतरते ही पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने संबंधित एयरलाइन का नाम उजागर नहीं किया है। आरोपी पर 'मर्यादा भंग करने के इरादे से बल प्रयोग' की धारा के तहत मामला दर्ज किया गया है। बता दें कि सिंगापुर में महिला के साथ छेड़छाड़ एक अपराध है जिसके लिए तीन साल तक की कैद, जुर्माना, बेंत या तीनों में से किसी भी तरह की सजा हो सकती है। एयरपोर्ट पुलिस डिवीजन की कमांडर असिस्टेंट कमिश्नर एम मालथी ने इस घटना की कड़ी निंदा की। उन्होंने कहा कि हम ऐसी घटनाओं को गंभीरता से लेते हैं क्योंकि केबिन क्रू प्रशिक्षित पेशेवर होते हैं जो सभी यात्रियों की सुरक्षा और भलाई सुनिश्चित करने के लिए समर्पित होते हैं। उन्होंने कहा कि पुलिस एयरलाइन कर्मचारियों और विमान में सवार यात्रियों को किसी भी तरह के यौन उत्पीड़न या हमले से बचाने के लिए प्रतिबद्ध है।

'शुक्रिया मोदी साहब, सोई कौम को जगा दिया'

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में वक्फ संसोधन के खिलाफ मुस्लिम संगठनों ने बैठक की। इस दौरान पूर्व सांसद और मुस्लिम नेता मोहम्मद अदीब केंद्र सरकार पर जमकर निशाना साधा। मोहम्मद अदीब ने कहा कि मोदी जी का शुक्रिया, आपने एक सोई हुई कौम को जगा दिया। हम पिछले 10 - 11 सालों से इधर-उधर जा रहे थे लेकिन ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने सबको एक मंच पर इकट्ठा कर दिया है। इस काले कानून के खिलाफ हमें लड़ना है।

पूर्व सांसद मोहम्मद अदीब ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट को अगर अपनी अजमत कायम रखनी है तो जिन पॉइंट पर सुप्रीम कोर्ट ऐतराज बताएं हैं उन पर पूरी तरह स्टे लगे। लेकिन हमारा मामला पूरे वक़्फ़ बिल को लेकर है। अदीब ने कहा कि पीएम मोदी कह रहे हैं कि गरीबों का भला कर रहे हैं। वक़्फ़ की जमीन छीन कर किसी का भला हो सकता है क्या।

मुस्लिम नेता मोहम्मद अदीब ने कहा कि बहुत सारे हिंदुओं को यह पता ही नहीं कि हमारे साथ क्या हो रहा है? वक़्फ़ का मामला क्या है, उनके पास जाओ और उन्हें बताओ। यह हमारे क़त्ल की साजिश है। आप तैयार रहें, छोटी मीटिंग्स करें। सभी को बताएं के ये गैर कानूनी चीज है। वहीं, मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड के प्रवक्ता कासिम रसूल ने कहा कि हम यूपी में भी वक़्फ़ विरोधी कार्यक्रम करेंगे। हम रुपरेखा तैयार कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हम सीएम योगी से भी पंजा आजमाइश करेंगे।

पहलगाम आतंकी हमले का असर

सऊदी अरब का दौरा बीच में छोड़कर भारत लौटेंगे मोदी

नई दिल्ली (एजेंसी)। पहलगाम आतंकी हमले का असर दिखाई देने लगा है। प्रधानमंत्री मोदी ने अपना विदेश दौरा बीच में ही छोड़ने का फैसला लिया है। पीएम ने सऊदी अरब द्वारा आयोजित आधिकारिक रात्रिभोज में भाग नहीं लिया और अपनी यात्रा को छोटा करने का फैसला किया। वे आज रात ही भारत के लिए रवाना होंगे। पहले उनका बुधवार रात को वापस लौटने का कार्यक्रम था, लेकिन अब वे बुधवार सुबह जल्दी भारत पहुंचेंगे। इस बीच अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप समेत दुनिया के तमाम देशों के नेताओं ने इस हमले की निंदा की है। ट्रंप ने पहलगाम आतंकी हमले को लेकर पीएम मोदी से बात करने की भी जानकारी दी है। जम्मू कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों पर हुए आतंकी हमले में 26 लोगों की मौत हुई है और कई घायल हैं। इन 26 लोगों में 25 पर्यटक हैं और एक स्थानीय नागरिक है। मरने वालों में भारतीय मूल के 2 विदेशी नागरिकों की भी जान गई है। आतंकियों ने पर्यटकों पर 50 से ज्यादा राउंड फायरिंग की है। हालात का अंदाजा इस बात से लगाया जा

सकता है कि खुद केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह दिल्ली से श्रीनगर पहुंचे हैं। इस आतंकी हमले को लेकर पीएम मोदी ने अमित शाह से फोन पर भी बात की है। दोपहर 2.30 बजे 2-3 की संख्या में आतंकी पहुंचे और उन्होंने सैलानियों के आइडेंटिटी कार्ड देखना शुरू किया। इसके बाद उन्होंने अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी। इस मौके पर एक सेना अधिकारी भी मौजूद था, जो अपने साथ परिवार को लेकर यहां घूमने आया था। उसने वहां मौजूद लोगों को बचाया और आड़ ली। आतंकवादियों ने लोगों से नाम पूछकर उनकी गोली मारकर हत्या की। ये पूरी घटना जम्मू-कश्मीर के पहलगाम के बैसराणा में घटी। इस आतंकी हमले से देशभर में हड़कंप मच गया है और पीएम मोदी, अमित शाह, राजनाथ सिंह समेत देश के तमाम बड़े नेताओं ने इस घटना की निंदा की है।

प्रेमिका से मिलने गया प्रेमी शोर सुनकर हुआ फरार, ग्रामीणों ने बॉयफ्रेंड के दोस्त से ही जबरन करा दी शादी

बांका (एजेंसी)। जिले में एक हैरान कर देने

वाला मामला सामने आया है। यहां बोकनमा गांव में रविवार देर रात एक अनोखी और चौंकाने वाली घटना ने सबको हैरत में डाल दिया। दरअसल, एक युवक यहां अपनी प्रेमिका से मिलने के लिए आया हुआ था, लेकिन ग्रामीणों को पता चलने के बाद युवक मौके से फरार हो गया। इसके बाद ग्रामीणों ने प्रेमी के साथ आए उसके दोस्त को ही पकड़ लिया और जबरन युवती से शादी करा दी। वहीं प्रेमी की जगह उसके दोस्त से युवती की शादी का मामला पूरे इलाके में चर्चा का विषय बना हुआ है। मिली जानकारी के अनुसार, बांका थाना क्षेत्र के चोराकोल निवासी कुंदन यादव का बोकनमा गांव की यशोदा कुमारी से प्रेम-प्रसंग चल रहा था। रविवार को कुंदन ने यशोदा को एक महंगा मोबाइल फोन भेंट किया। जब यह बात यशोदा के भाई संजय यादव को पता चली, तो उन्होंने बहन से पूछताछ की।

पूरे साल जहरीली बनी रहती है दिल्ली की हवा

रेस्पिरर लिविंग साइंस की रिपोर्ट में हुआ खुलासा

अयोध्या (एजेंसी)। सर्दियों के मौसम में दिल्ली की हवा जहरीली बनी रहती है और लोगों का सांस लेना मुश्किल बना रहता है लेकिन अब रिपोर्ट बता रही है कि दिल्ली की हवा में जहर सिर्फ सर्दियों की समस्या नहीं है, बल्कि सालों भर हवा में जहर घुला रहता है यानी हर मौसम में दिल्ली की हवा प्रदूषित रहती है। रेस्पिरर लिविंग साइंस ने अपनी रिपोर्ट में ये दावा किया है। इस रिपोर्ट में एटलस्नक्त से लिए गए डेटा के आधार पर बीते चार साल का विश्लेषण किया गया है और इसके आधार पर बताया गया है कि दिल्ली में पीएम 10 का स्तर पूरे साल तय मानकों से अधिक बना रहता है।

रेस्पिरर लिविंग साइंसेज की एक रिपोर्ट के अनुसार, दिल्ली में वायु गुणवत्ता की स्थिति बदलती रहती है और सर्दियों में तो हर सप्ताह प्रदूषण में वृद्धि दर्ज की जाती है। रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि दिल्ली का औसत पीएम 2.5 स्तर 243.3 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर है। जारी की गई इस रिपोर्ट में हाइपरलोकल वायु गुणवत्ता निगरानी का उपयोग करके शहरी भारत में प्रदूषण के हॉटस्पॉट की पहचान की गई है।

रिपोर्ट में 500×500 मीटर के रिज़ॉल्यूशन के साथ वायु गुणवत्ता के रुझान दिखाए गए हैं, जिससे नीति निर्माताओं, शहरी योजनाकारों और नागरिकों को

कार्रवाई योग्य जानकारी प्राप्त हो रही है। रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि सार्वजनिक भागीदारी व्यक्तिगत जागरूकता बढ़ाने के अलावा स्वच्छ शहरों के लिए साझा इच्छा को बढ़ावा देती है। दिल्ली-एनसीआर, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश सहित उत्तरी क्षेत्रों में गंभीर प्रदूषण की घटनाएं जारी हैं, लेकिन वाराणसी जैसे शहरों ने उल्लेखनीय प्रगति की है। संक्षेप में, रेस्पिरर लिविंग साइंसेज की रिपोर्ट में भारत में वायु गुणवत्ता की स्थिति और प्रदूषण के हॉटस्पॉट के बारे में चिंताजनक जानकारी दी गई है। रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि सार्वजनिक भागीदारी और हाइपरलोकल वायु गुणवत्ता निगरानी प्रदूषण को कम करने में मदद कर सकती है।

आप नेता आतिशी की घटाई जाएगी सुरक्षा

जेड के बजाय मिलेगी वाई कैटेगरी, गृह मंत्रालय का निर्देश

हमीरपुर (एजेंसी)। दिल्ली की पूर्व सीएम और आम आदमी पार्टी की नेता आतिशी की सुरक्षा को %जेड% कैटेगरी से घटाकर %वाई% कैटेगरी किया जाएगा। गृह मंत्रालय ने इसके लिए दिल्ली पुलिस को निर्देश दे दिया है। पुलिस सूत्रों ने मंगलवार को यह जानकारी साझा की है। एक पुलिस अधिकारी ने बयान देते हुए कहा कि यह फैसला केंद्रीय सुरक्षा एजेंसियों द्वारा आतिशी की सुरक्षा और खतरे की समीक्षा के बाद लिया गया है। सुरक्षा एजेंसियों की समीक्षा में ये निष्कर्स निकला कि उन्हें नया या कोई बड़ा खतरा नहीं है, जिसके लिए %जेड% श्रेणी की सुरक्षा रखी जाए।

पुलिस के एक सूत्र ने इस मामले पर कहा कि यह निर्देश उस समय जारी किया गया था, जब दिल्ली पुलिस की सुरक्षा इकाई ने आतिशी की सुरक्षा स्थिति पर गृह मंत्रालय से मार्गदर्शन की मांग की थी। इससे पहले दिल्ली पुलिस ने आम आदमी पार्टी को प्रमुख अरविंद केजरीवाल की सुरक्षा स्थिति को लेकर भी गृह मंत्रालय से सवाल किया था कि क्या केजरीवाल की सुरक्षा को जारी

रखा जाना चाहिए। बता दें कि वर्तमान में अरविंद केजरीवाल को जेड प्लस की सुरक्षा मिली हुई है। अधिकारी ने कहा, ''हालांकि, मंत्रालय ने शुरू में केजरीवाल और आतिशी दोनों के लिए सुरक्षा व्यवस्था में कोई भी बदलाव न करने की सलाह दी थी, लेकिन बाद में उसने दिल्ली पुलिस को आतिशी की सुरक्षा को घटाकर 'वाई' श्रेणी की सुरक्षा करने का निर्देश दिया।''

'वाई' श्रेणी की सुरक्षा प्रोटोकॉल के तहत, आतिशी को अब दिल्ली पुलिस के दो कमांडो सहित लगभग 12 कर्मियों की एक टीम द्वारा सुरक्षा प्रदान की जाएगी। बता दें कि जेड श्रेणी से वाई श्रेणी में सुरक्षा व्यवस्था को शिफ्ट करने के साथ ही आतिशी को मिलने वाली कई सुविधाओं में भी कटौती की जाएगी। जैसे, पायलट वाहन, जो उनके काफिले के साथ उस समय चला करता था, जब वह दिल्ली की मुख्यमंत्री थीं। अधिकारी ने बताया कि मार्च में दिल्ली पुलिस ने दिल्ली के पूर्व उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया, आप विधायक अजय दत्त और दिल्ली विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष राम निवास गोयल को दी गई वाई श्रेणी की सुरक्षा को वापस लेने का प्रस्ताव रखा था।

7 बच्चों की मां पर आया अधेड़ का दिल

पत्नी और बेटियों को बेसहारा छोड़ हुआ फरार

बांका (एजेंसी)। बिहार के बांका जिले के शंभूगंज थाना क्षेत्र के मोहनपुर गांव से एक बेहद विचलित कर देने वाली खबर सामने आई है। यहां एक अधेड़ उम्र के शख्स को फुल्लीडुमर के भरको गांव की एक महिला से प्रेम हो गया, जिसके सात संतान हैं। प्रेम के इस चक्कर में उसने अपनी पत्नी और दो नाबालिग बेटियों को बेसहारा छोड़ दिया। पीड़ित पत्नी, बुगो देवी ने मंगलवार को स्थानीय थाना पहुंच कर पति नीतीश कुमार के खिलाफ लिखित शिकायत दर्ज कराई।

बुगो देवी ने बताया कि उनकी शादी को 20 साल से अधिक हो चुके हैं और उन्हें तीन बेटियां हैं। एक बेटी की शादी भी हो चुकी है, लेकिन बेटा न होने के कारण पति हमेशा ताने देता था और घरेलू हिंसा करता रहा। अब, नीतीश कुमार पिछले एक महीने से भरको गांव

की महिला के साथ घर छोड़कर फरार है, जिससे पीड़िता और उसकी दो बेटियां आर्थिक एवं मानसिक रूप से बेहद परेशान हैं। पीड़िता का कहना है कि घर की आर्थिक स्थिति पहले से ही खराब थी, लेकिन पति के चले जाने के बाद स्थिति और बदतर हो गई है। दो नाबालिग बेटियां दाने-दाने को मोहताज हैं। बुगो देवी ने आरोप लगाया कि जब उसने पति के इस गलत संबंध का विरोध किया, तो उसके साथ मारपीट की गई और धमकियां भी दी गई।

पत्नी ने की सख्त कार्रवाई की मांग: उन्होंने प्रशासन से गुहार लगाई है कि उनके पति के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की जाए, ताकि उन्हें और उनकी बेटियों को न्याय मिल सके और घर की टूटी हुई गाड़ी फिर से पटरी पर आ सके। शंभूगंज थानाध्यक्ष मंटू कुमार ने मामले को गंभीरता से लेते हुए जांच शुरू कर दी है। उन्होंने भरोसा दिलाया है कि दोषी पाए जाने पर नीतीश कुमार के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

मुस्लिम युवक ने खुद को हिंदू बताकर लड़की से बनाए शारीरिक संबंध

मुजफ्फरपुर (एजेंसी)। बिहार के मुजफ्फरपुर से एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है। यहां एक मुस्लिम युवक ने खुद को हिंदू बताकर पहले एक लड़की को अपने प्रेम जाल में फंसाया और फिर उस पर धर्म परिवर्तन का भी प्रेशर डाला। पीड़ित लड़की को 8 साल बाद पता चला कि उसका प्रेमी सूरज नहीं बल्कि शमशाद है। अब इस मामले में युवती ने पुलिस ने न्याय मांगा है।बिहार के मुजफ्फरपुर में एक मुस्लिम युवक ने नाम बदलकर युवती को पहले अपने प्रेमजाल में फंसाया, फिर उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए और

जब युवती ने शादी के लिए बोला तो कहने लगा कि इस्लाम धर्म अपनाओ, गोमांस खाओ, उसके बाद ही निकाह करेंगे। अब पीड़िता ने आरोपी युवक के खिलाफ ग्रामीण एसपी से शिकायत की है।दरअसल कोचिंग में जान पहचान के बाद धर्म छिपाकर युवक ने युवती से दोस्ती की थी। पढ़ाई के बाद युवती की दिल्ली में जॉब हो गई। इसी बीच दोनों की दोस्ती प्रेम में बदल गई। युवती को शमशाद नामक युवक ने सूरज बनकर प्रेम जाल में फंसाया और संबंध बनाए। जब युवती दिल्ली में जॉब करने लगी तो युवक ने बड़ी राशि ऐंठ ली। युवती ने जब युवक को शादी के लिए बोला तो युवक ने कहा कि पहले धर्म परिवर्तन करो।युवक यहीं नहीं रुका बल्कि युवती को ब्लैकमेल करने लगा। अब युवक द्वारा युवती को जान से मारने की धमकी दी जा रही है।

आईये, हम सब मिलकर पृथ्वी को हरा-भरा और सुंदर बनाएं -मुख्यमंत्री

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर प्रदेशवासियों से पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सक्रिय भागीदारी की अपील की है। उन्होंने कहा कि यह दिन हमें पृथ्वी के प्रति अपने कर्तव्यों की याद दिलाता है और पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए संकल्पित होने का अवसर देता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोशल मीडिया एक्स पर कहा कि यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टय: संबभूवु:। यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत्सा नो भूमि: पूर्वपेये दधातु॥ यह वैदिक मंत्र पृथ्वी की महानता और सबके लिए उसके पोषक स्वरूप का भान कराता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने नागरिकों से अपील की है कि वे अधिक से अधिक पौध-रोपण करें और पृथ्वी को हरा-भरा व सुंदर बनाने में योगदान दें। उन्होंने कहा कि पृथ्वी हमारी जननी है, इसका संरक्षण हमारा धर्म है। आइए, हम सब मिलकर हमारी अपनी धरती को फिर से हरियाली से भर दें।

नीलगाय के लिए लगेंगे क्रश बैरियर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल रेल मंडल के 150 किमी लंबे ट्रैक पर बरेठ से भोपाल होते हुए नर्मदापुरम तक ट्रेनों व यात्रियों की सुरक्षा के लिए इंतजामात शुरू किए जा रहे हैं। इसके तहत मेटल क्रश बैरियर, सेफ्टी फेंसिंग और बाउंड्री वॉल का निर्माण किया जाएगा। सेक्शन में इस पर करीब 68 करोड़ रुपए से अधिक खर्च किए जाएंगे। बीना से भोपाल के बीच पड़ने वाले बरेठ से लेकर ?विदिशा तक रेलवे ट्रैक पर गाय-भैंस, नीलगाय और सियार ट्रेनों से टकराते हैं। जबकि, विदिशा से भोपाल होते हुए नर्मदापुरम तक बैल, सूअर व भैंसें ट्रेनों से टकराती हैं। इन पर लगाम लगाने के लिए यह इंतजाम किए जा रहे हैं। वर्तमान में भोपाल रेल मंडल के बीना से इटारसी सेक्शन में ट्रेनों को 130 किमी प्रति घंटे की स्पीड से चलाया जाने लगा है। ट्रेनों की बढ़ती रफ्तार को देखते हुए रेल मंडल जानवरों को ट्रैक तक जाने से रोकने के लिए अलग-अलग सेक्शन के हिसाब से प्रोटेक्शन वॉल का निर्माण कर रहा है। गौरतलब है कि एक साल में ट्रैक पर कटने वाले जानवरों की संख्या करीब 380 के आसपास है।

कजलीखेड़ा स्टेशन और पांच नंबर तालाब पहुंची सर्वे टीम

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। स्वच्छ सर्वेक्षण-2025 के लिए भोपाल में गार्बेज फ्री सिटी (जीएफसी) का सर्वे चल रहा है। टीम सोमवार को प्रमुख रूप से 5 नंबर के तालाब के साथ कजलीखेड़ा के गार्बेज ट्रांसफर स्टेशन पहुंची। टीम ने जल स्त्रोत के साथ पार्क, मार्केट और रहवासी इलाकों का निरीक्षण किया। हालांकि, नगर निगम के अधिकारियों को यह तब पता चला जब टीम वहां से रवाना हो चुकी ?थी। टीम वार्ड-27 और जोन-9 और 12 में भी गई और देर शाम तक सर्वे किया गया। यह सर्वे 10 दिन तक चल सकता है। शहर में डोर टू डोर कचरा कलेक्शन के लिए 700 वाहनों में से 250 सीएनजी हैं। पहले शहर में 12 गार्बेज स्टेशन थे, जो अब 15 हो गए हैं। 17.74 करोड़ से 3 नए अल्ट्रा मॉर्डन गार्बेज ट्रांसफर स्टेशन अन्ना नगर, गोंडीपुरा और जिंसी में बनाए गए हैं। शहरों में ट्रिपल आरआरआर यानी रिड्यूस, रीयूज और रिसाइकिल के तहत प्लास्टिक वेस्ट प्रोसेसिंग प्लांट, थर्माकोल रिसाइकिल यूनिट, कोकोनट और फूल के रिसाइकिल प्लांट लगाए गए। 6सूखे और गीले कचरे की छंटाई। 6सफाई व्यवस्था का मूल्यांकन। 6वेस्ट स्टोरेज और डस्टबिन की स्थिति। 6यूजर फीस और फाइन सिस्टम। 6बल्क वेस्ट जेनरेटर की जिम्मेदारी। 6वैज्ञानिक तरीके से कचरे का निष्पादन। 6पुराने कचराघरों का उपचार और साफ-सफाई। 6जल स्त्रोतों और नालों की सफाई। 6शहर का सौंदर्यीकरण।

नरेला विधानसभा में अमृत 2.0 योजना से सीवेज नेटवर्क का होगा विस्तार

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सहकारिता मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने सोमवार को नरेला विधानसभा क्षेत्र के सभी 17 वार्डों के अंतर्गत 'अमृत 2.0 योजना' के तहत प्रस्तावित निर्माण कार्यों की समीक्षा बैठक की। बैठक के दौरान अधिकारियों ने जानकारी दी कि अमृत 2.0 योजना में नरेला क्षेत्र में लगभग 268 किलोमीटर लंबी सीवेज लाइन बिछाई जाएगी, जिससे 50 हजार से अधिक घरों को सीवेज सुविधा से जोड़ा जा सकेगा।

मंत्री श्री सारंग ने निर्देश दिए कि कार्य प्रारंभ करने से पहले वार्डवार सर्वे कर, प्रत्येक घर, गली और नाली की सटीक मैपिंग की जाए, जिससे कार्ययोजना वैज्ञानिक ढंग से तैयार की जा सके। उन्होंने यह भी निर्देशित किया कि खुदाई कार्यों के दौरान नागरिकों को न्यूनतम असुविधा हो, प्रत्येक कॉलोनी में एक बार में अधिकतम 200 मीटर क्षेत्र में ही खुदाई की जाए। मंत्री श्री सारंग ने निर्देश दिए कि सर्वेक्षण के दौरान जीआई टैगिंग तकनीक का उपयोग किया जाए जिससे क्षेत्र का सटीक डिजिटल डेटा तैयार हो सके। उन्होंने एक विशेष मोबाइल एप्लीकेशन विकसित करने के निर्देश भी दिए, जिससे नागरिकों को कार्य की प्रगति की जानकारी सुलभ रूप से उपलब्ध हो सके और पारदर्शिता बनी रहे।

मंत्री श्री सारंग ने कहा कि हर घर में चैंबर बनाया जाये. साथ ही दो वार्डों के मध्य एक पंप स्टेशन बनाया जाये। उन्होंने यह भी निर्देश दिये हैं कि सभी निर्माण कार्य निर्धारित समय-सीमा में पूरे किए जाएं और गुणवत्ता के मानकों से किसी प्रकार का समझौता न हो। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि यह योजना नरेला विधानसभा को स्वच्छ, स्वस्थ और सुविधाजनक बनाने की दिशा में एक सकारात्मक परिवर्तन लेकर आएगी।

एक महीने में जेपी अस्पताल में डॉग बाइट के 2500 मामले पहुंचे

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सिविल अस्पताल परिसर में सोमवार को बड़ा हादसा टल गया। यहां आवारा कुत्तों के झुंड ने 3 साल के मासूम पर अचानक हमला कर दिया। बच्चा अस्पताल परिसर में परिजनों के साथ मौजूद था। तभी कुत्तों ने घेर लिया। मौके पर मौजूद लोगों ने तुरंत बच्चे को बचा लिया। अस्पताल परिसर में लंबे समय से आवारा कुत्तों का डेरा है।

मरीज और उनके परिजन रोज डर के साए में अस्पताल आते हैं। सिविल अस्पताल की डॉक्टर विभा जैन ने इस समस्या को लेकर कई बार नगर पालिका को लिखित शिकायत दी है। इसके बावजूद अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई। जेपी अस्पताल में कुत्ते के काटने (डॉग बाइट) के मरीजों की बढ़ती संख्या को देखते हुए, अस्पताल प्रशासन ने ड्रेसिंग यूनिट के बगल में अलग से क्लीनिक शुरू किया है। बीते एक महीने में यहां 2500 से ज्यादा मरीज पहुंचे। इनमें बड़ी संख्या में बच्चे और बुजुर्ग शामिल हैं। अकेले 15 से 19 अप्रैल के बीच 730 से अधिक केस दर्ज हुए। मरीजों को यहां एंटी-रेबीज वैक्सीन और जरूरत पड़ने पर इम्युनोग्लोबिन इंजेक्शन दिया जा रहा है।

बीयू में 3 दिवसीय पुस्तकालय अभिविन्यास कार्यक्रम

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पुस्तकालय ज्ञान का ट्रांस फॉर्मेशन सेंटर होता है। डिजिटल युग में लाइब्रेरी की उपयोगिता कम नहीं हुई है, बल्कि इसकी पहुंच और प्रभाव बढ़ा है। यह बातें प्रो. विवेक शर्मा ने बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय में सेंट्रल लाइब्रेरी द्वारा आयोजित 3 दिवसीय पुस्तकालय अभिविन्यास कार्यक्रम में आए लोगों को संबोधित करते हुए कही। कार्यक्रम का शुभारंभ सोमवार को माइक्रोबायोलॉजी विभाग में हुआ। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों, शोधार्थियों और शिक्षकों को केंद्रीय पुस्तकालय में उपलब्ध संसाधन, ई-ग्रंथालय सॉफ्टवेयर की उपयोगिता समेत अन्य जरूरी पहलुओं से संबन्धित जानकारी मुहैया कराना है। कार्यक्रम का

मार्गदर्शन विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार जैन कर रहे हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलसचिव डॉ. आईके मंसूरी ने की। विशिष्ट अतिथियों में फारसी व अरबी विभाग के अध्यक्ष प्रो. ताहिरा अब्बास, सीआरआईएम निदेशक प्रो. विवेक शर्मा, बीयू आईटी निदेशक प्रो. नीरज गौड़ समेत अन्य शामिल रहे।

माइक्रोबायोलॉजी विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. अनीता ने कहा कि पुस्तकालय किसी भी विश्वविद्यालय की शैक्षणिक आत्मा होता है। जहां से ज्ञान की ऊर्जा पूरे परिसर में प्रवाहित होती है। ऐसे अभिविन्यास कार्यक्रमों से छात्र न केवल पुस्तकालय से परिचित होते हैं, बल्कि रिसर्च और अध्ययन की गंभीरता को भी आत्मसात करते हैं।

राष्ट्रीय लोक सेवा दिवस

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सिविल सेवा सिर्फ एक पेशा नहीं, यह जनसेवा का प्रभावी माध्यम है। सिविल सेवकों का दायित्व है कि वे अपने अधिकारों का सदुपयोग करें, लेकिन कर्तव्यों से कभी विमुख न हों। लोक प्रशासन का मूल मंत्र ही हर संभव तरीके से लोगों की सेवा करना है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने राष्ट्रीय लोकसेवा दिवस पर प्रदेश के नौकरशाहों को संबोधित करते हुए यह बात कही। नरोन्हा प्रशासन अकादमी में आयोजित इस समारोह में मुख्यमंत्री ने पिछले दो साल में बेहतर काम करने वाले प्रदेश के 16 लोक सेवकों को मुख्यमंत्री उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया। सभी को एक लाख रुपए की राशि और प्रशस्तिपत्र देकर सम्मानित किया।

सीएम ने कहा कि सभी लोक सेवकों को शासन व्यवस्था में पारदर्शिता लाने और लोक जवाबदेही की भावना को और मजबूत करने की दिशा में काम करना होगा।

मुख्य सचिव अनुराग जैन ने कहा कि देश के पहले गृहमंत्री सरदार पटेल ने सिविल सर्वेंट को स्टील फ्रेम ऑफ इंडिया कहा था, तब उन्होंने यह भी कहा था कि लोकसेवकों के लिए तीन बातें जोर देकर कही थी, डिग्निटी, इंटेग्रिटी और इनकरप्टिबिलिटी (गरिमा, सत्यनिष्ठा और भ्रष्ट न होने क्षमता)। यह आज भी हमारे लिए आदर्श प्रेरणा स्रोत हैं। नरोन्हा व्याख्यान में इस बार मुख्य वक्ता इन्वेस्ट इंडिया के पूर्व एमडी व सीईओ डॉ. दीपक बागला थे।

मुख्यमंत्री ने सड़क दुर्घटनाओं में प्रभावित परिवारों को स्वीकृत की आर्थिक सहायता

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेश के रायसेन, टीकमगढ़ और चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) में हुई दुर्घटनाओं में प्रदेश के नागरिकों के असामयिक निधन पर दु:ख व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मुख्यमंत्री स्वेच्छानुदान से सभी मृतकों के परिजनों को 2-2 लाख रुपए एवं गंभीर घायलों को 50-50 हजार रुपए की आर्थिक सहायता राशि प्रदान करने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोशल मीडिया एक्स पर कहा कि वे दु:ख की इस घड़ी में शोकाकुल परिजनों के साथ हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि इन सड़क दुर्घटनाओं में दिवंगत नागरिकों की आत्मा की शांति के लिए बाबा महाकाल से प्रार्थना है। साथ ही घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की भी प्रार्थना है। संबंधित जिलों के प्रशासनिक अमले को प्रभावित परिवारों की सहायता के निर्देश दिए गए हैं। उल्लेखनीय है कि चित्तौड़गढ़ के निंबाहेड़ा क्षेत्र में रविवार रात एक कार अनियंत्रित होकर ट्रक से टकरा गई, जिससे कार में सवार सात में से चार नागरिकों का निधन हो गया। दुर्घटना में मृत सभी लोग उज्जैन के निवासी थे, जो धार्मिकि यात्रा के लिए सांवलिया सेठ मंदिर जा रहे थे।

प्रधानमंत्री उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित हुई मध्यप्रदेश की साइबर तहसील पहल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने मध्यप्रदेश के राजस्व विभाग को साइबर तहसील पहल के लिये प्रधानमंत्री उत्कृष्टता पुरस्कार-2023 से सम्मानित किया। राजस्व विभाग के प्रमुख सचिव श्री विवेक पोरवाल ने लोक सेवा दिवस के अवसर पर नई दिल्ली विज्ञान भवन में आयोजित समारोह में यह पुरस्कार प्राप्त किया। राजस्व विभाग ने साइबर तहसील पहल से राज्य में भूमि नामांतरण सेवाओं को पूरी तरह से डिजिटल, प्रभावी और नागरिकों के अनुकूल बनाकर एक बड़ा बदलाव किया है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के सुशासन के सिद्धांत को साकार करने के लिए प्रदेश में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में इस पहल के माध्यम से अब तक 1 लाख 50 हजार से अधिक प्रकरणों का निपटारा किया जा चुका है। साइबर तहसील के अंतर्गत नामांतरण की प्रक्रिया संपत्ति रजिस्ट्री के समय ही स्वचालित रूप से शुरू हो जाती है, जिससे अलग से आवेदन करने की आवश्यकता समाप्त हो गई है। पहले जहां इस प्रक्रिया में औसतन 70 दिन लगते थे, वहीं अब मात्र 20 दिनों में प्रकरणों का निपटारा हो रहा है। सम्पूर्ण प्रक्रिया ऑनलाइन होने से नागरिकों को तहसील कार्यालय जाने की आवश्यकता नहीं है। सभी सेवाएं जैसे सार्वजनिक सूचना, आपत्ति दर्ज कराना और प्रमाणित आदेश प्राप्त करना, एसएमएस, ईमेल और व्हाट्सएप के माध्यम से डिजिटल रूप से उपलब्ध होती हैं।

इस पहल ने नागरिकों के समय और खर्च दोनों में महत्वपूर्ण बचत सुनिश्चित की है और पारदर्शिता को भी बढ़ावा दिया है, इससे नागरिक अपने नामांतरण मामले की स्थिति को आरसीएमएस पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन ट्रैक कर सकते हैं। साइबर तहसील ने क्षेत्रीय सीमाओं को समाप्त कर दिया है और केंद्रीकृत प्रणाली से प्रकरणों का आवंटन साइबर तहसीलदारों को राउंड-रॉबिन पद्धति से किया जाता है, जिससे निष्पक्ष और त्वरित निपटारा सुनिश्चित होता है।

गाँव स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बने इसके लिए पंच-सरपंच बेहतर कार्य करें: मंत्री पटेल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पंचायत एवं ग्रामीण विकास व श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने सोमवार को पंच-सरपंच उन्मुखीकरण कार्यक्रम का शुभारंभ किया। जनजातीय कार्य, लोक परिसंपत्ति प्रबंधन, भोपाल गैस त्रासदी राहत एवं पुनर्वास मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह मौजूद थे। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि पंचायतीराज की कल्पना भारत में ही की गई थी। इसे महात्मा गाँधी, पं. दीनदयाल उपाध्याय, राम मनोहर लोहिया इन 3 भारतीय विचारकों ने भारतीय राजनीति में दिशा देने का कार्य किया। पंचायतीराज की जो सामुदायिक परिकल्पना है, वह हमारी परंपराओं और हमारे पंच परमेश्वर के दर्शन में है।

हमारी पंचायत व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए, जो आत्मनिर्भर व स्वावलंबी हो। उन्होंने कहा कि श्री लोहिया ने कहा जाति की श्रृंखला तोड़ देनी चाहिए। समाज के हर व्यक्ति को बराबर का दर्जा होना चाहिए। उन्होंने पंच-सरपंचों से कहा कि आप अपनी ग्राम पंचायतों के सर्वे-सर्वा हो, यह गांव आपका है। आपको अपने तरीके से सोचना होगा, आपके पास पैसे की कमी नहीं है। पैसे का उपयोग कैसे करेंगे यह आपको सोचना होगा। इससे आपका और आपकी ग्राम पंचायतों का भविष्य बेहतर होगा। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि पंचायतों को अपने संसाधनों से आत्मनिर्भर बनाना चाहिए। सभी पंचायतों में सामुदायिकता का भाव होना चाहिए और पंचायतों के लिए पाँच वर्ष के लिए कौन-से कार्य करना है यह सोचना चाहिए। उन्होंने कहा कि तालाब, सड़क, बांध तकनीक को ध्यान में रखकर बनाए जाए। पंचायतों में बेहतर रिकॉर्ड रखने का कार्य दूसरी संस्था नहीं कर सकती है। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि नये पंचायत भवन 3 मंजिला बनाये जा रहे हैं, जिसे ग्राम पंचायत द्वारा ही बनाया जाएगा। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि पंचायती राज के अंतर्गत जल गंगा संवर्धन अभियान सफल होगा, जहाँ नदियों का संगम होगा।

पशुपालकों को उपलब्ध कराएं उन्नत नस्ल के सांड

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। विभागीय योजनाओं के माध्यम से पशुपालकों को उन्नत नस्ल के सांड उपलब्ध कराएं, जिससे गो वंश का नस्ल सुधार हो और दुग्ध का उत्पादन बढ़ाकर किसानों की आय बढ़ाई जा सके। मध्यप्रदेश विधानसभा की कृषि विकास समिति द्वारा सोमवार को पशुपालन एवं डेयरी विभाग के अंतर्गत संचालित शासकीय जर्सी पशु प्रजनन क्षेत्र भदभदा, भोपाल, के भ्रमण के दौरान विभागीय अधिकारियों को ये निर्देश दिए गए।

समिति में अध्यक्ष श्री दिलीप सिंह परिहार एवं सदस्य श्री उमाकांत शर्मा, श्री नरेंद्र प्रजापति एवं श्री श्रीकांत चतुर्वेदी शामिल थे। भ्रमण के दौरान समिति के सदस्यों द्वारा विगत 3 वर्षों में प्रक्षेत्र की संचालन प्रक्रिया, प्रक्षेप पर संधारित नस्लों, प्रक्षेत्र के आय व्यय, बाउंड्री वॉल के निर्माण, असिंचित भूमि को सिंचित करने, कॉन्फ्रेंस हॉल की व्यवस्था, गोवंश की जेनेटिक ब्रीडिंग वैल्यू टेस्टिंग, प्रक्षेत्र का सीमांकन तथा पशुपालकों को डेयरी प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण संस्थान के निर्माण आदि विषयों पर चर्चा की गई। समिति द्वारा प्रक्षेत्र पर साहिवाल के अलावा निमाड़ी एवं मालवीय नस्ल के गोवंशों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए नीति बनाने हेतु भी कहा गया।

मंत्री श्री पटेल जल गंगा संवर्धन अभियान कार्यक्रम में हुए शामिल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। जल गंगा संवर्धन अभियान में पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग व श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने खंडवा विकासखंड के ग्राम कावेश्वर में शिवजी के मंदिर में दर्शन कर जलाभिषेक किया। महाराज दयालगिरी का आशीर्वाद लेकर उन्हें शॉल-श्रीफल भेंट किया। मंत्री श्री पटेल ने नर्मदा की सहायक नदी कावेरी के उद्गम स्थल में पूजा-अर्चना कर श्रीफल अर्पित कर माता को चुनरी चढ़ाई। उन्होंने जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत श्रमदान भी किया। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि संगम चाहे नदियों का हो, चाहे वृक्षों का हो, वो जीवन देता है। उन्होंने कहा कि पौधे लगाकर प्रकृति की रक्षा करें। वन को बचाना है तो वनवासियों की तरह सोचना होगा। कावेरी के उद्गम स्थल पर आते ही अलग ही उर्जा की अनुभूति होती है। वृक्ष ही जल का स्त्रोत है, वृक्ष अधिक से अधिक लगाएं। मंत्री श्री पटेल ने कावेश्वर में सामुदायिक भवन निर्माण के लिए 50 लाख रूपये की स्वीकृति प्रदान की। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि मैंने पौध-रोपण के परिणामों को देखा, हम पौधा लगाते हैं लेकिन उन्हें वृक्ष नहीं बना पाते।

छात्रवृत्ति के आवेदन दो दिवस में निराकृत करें - कलेक्टर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने सभी प्राचार्य, डीन तथा छात्रवृत्ति के नोडल अधिकारियों को छात्रवृत्ति के आवेदन दो दिवस में निराकृत करने के निर्देश दिए हैं। कलेक्टर ने कहा है कि 28 अप्रैल को आयोजित होने वाली समाधान ऑनलाइन के एजेण्डा बिन्दुओं में छात्रवृत्ति वितरण की समीक्षा शामिल है। इसमें आदिवासी कल्याण विभाग, अनुसूचित जाति कल्याण विभाग के महाविद्यालयीन छात्रवृत्ति वितरण की समीक्षा की जाएगी। आवास सहायता तथा छात्रवृत्ति के सभी आवेदन पत्र दो दिवस में निराकृत करके उसकी जानकारी पोर्टल पर दर्ज करा दें। तय समय सीमा के बाद छात्रवृत्ति का प्रकरण लंबित रहने पर उत्तरदायी अधिकारी के विरूद्ध कड़ी अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी।

कृषक जनप्रतिनिधियों की फार्मर आईडी अनिवार्य रूप से बनाएं

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले भर में सभी तहसीलों में फार्मर आईडी बनाने के लिए शिविर लगाए जा रहे हैं। इन शिविरों के माध्यम से डिजिटल एग्रीकल्चर मिशन, डिजिटल क्रॉप सर्वे और फार्मर रजिस्ट्री का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने तहसीलदारों को कृषक जनप्रतिनिधियों की फार्मर आईडी अनिवार्य रूप से बनाने के निर्देश दिए हैं। कलेक्टर ने कहा है कि कृषि भूमिधारी मंत्रीगणों, सांसद, विधायकगणों, जिला पंचायत अध्यक्ष एवं सदस्यगणों तथा जनपद पंचायत अध्यक्ष एवं सदस्यगणों की फार्मर आईडी अनिवार्य रूप से बनवाएं। ग्राम पंचायत के सरपंच तथा पंचगणों की भी फार्मर आईडी बनाएं। साथ ही जनप्रतिनिधियों को फार्मर आईडी एवं डिजिटल एग्रीकल्चर मिशन से होने वाले लाभों के संबंध में भी अवगत कराएं।

श्रम विभाग ने हिमांशु शेखर को दिलाई 196269 रुपए ग्रेच्युटी की राशि

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)।श्रम विभाग द्वारा लोक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग की लाइट मशीनरी और विद्युत शाखा में कार्यरत श्री हिमांशु शेखर पाण्डेय को 196269 रुपए की ग्रेच्युटी की राशि का भुगतान कराया गया। इस संबंध में जिला श्रम पदाधिकारी प्रिया अग्रवाल ने बताया कि श्री पाण्डेय ने उपादान भुगतान अधिनियम 1972 के प्रावधानों के तहत श्रम पदाधिकारी को ग्रेच्युटी की राशि के भुगतान के लिए आवेदन पत्र प्रस्तुत किया था। श्रम पदाधिकारी द्वारा आवेदक को ग्रेच्युटी की 196269 रुपए की राशि भुगतान के लिए 15 मार्च 2021 को आदेश पारित किया था। इस आदेश के विरूद्ध अधिनियम के प्रावधानों के तहत उप श्रमायुक्त भोपाल को अपील की गई। अपील प्राधिकारी द्वारा सुनवाई के पश्चात अपील को अमान्य कर दिया गया। इसके बाद 16 मार्च 2025 को श्री हिमांशु शेखर पाण्डेय निवासी गुढ़ जिला रीवा को 196269 रुपए की ग्रेच्युटी की राशि का भुगतान किया गया।

मऊगंज में पिकअप ने बाइक को मारी टक्कर, डॉक्टर घायल

मीडिया ऑडीटर, मऊगंज (निप्र)। मऊगंज कस्बे के वार्ड क्रमांक 11 घूरेहटा में एक तेज रफ्तार पिकअप वाहन ने बाइक सवार डॉक्टर को टक्कर मार दी। हादसे में डॉक्टर संतोष कुमार मिश्रा गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना मंगलवार दोपहर 1 बजे की है। दरअसल, डॉक्टर संतोष कुमार मिश्रा कॉलेज से अपने घर लौट रहे थे। घर के पास पहुंचते ही तेज रफ्तार पिकअप ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में उनके दाहिने पैर में गंभीर चोट आई। स्थानीय लोगों ने तुरंत मदद की और घायल डॉक्टर को मऊगंज के गुरु वशिष्ट हॉस्पिटल पहुंचाया। डॉक्टरों ने उनके पैर में रॉड डालने की सर्जरी की। डॉक्टर मिश्रा को आईसीयू में भर्ती किया गया है। डॉक्टर के मुताबिक उनकी स्थिति में सुधार हो रहा है।

धार्मिक स्थलों पर लाउडस्पीकर और खुली मांस बिक्री का विरोध

ऊगंज में नागरिक संरक्षण समिति की महिलाओं ने कलेक्टर से की शिकायत

मीडिया ऑडीटर, मऊगंज (निप्र)। मऊगंज में नागरिक संरक्षण समिति की महिलाओं ने मंगलवार को धार्मिक स्थलों पर लाउडस्पीकर के अनियंत्रित इस्तेमाल और खुली मांस बिक्री को लेकर कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा है। आशा पटेल के नेतृत्व में महिलाओं ने राज्यपाल के नाम यह ज्ञापन कलेक्टर संजय जैन को दिया।

ज्ञापन में बताया गया कि केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने वायु अधिनियम 1981 के तहत 21 जून 2019 को मध्य प्रदेश में ध्वनि प्रदूषण नियंत्रण का एक्शन प्लान बनाने के निर्देश दिए थे। इसके बावजूद धार्मिक स्थलों पर निर्धारित डेसिबल सीमा का उल्लंघन किया जा रहा है।

महिलाओं ने बताया कि अत्यधिक शोर से लोगों की कार्यक्षमता, नींद और बातचीत प्रभावित होती है। इससे हाई ब्लड प्रेशर, बेचैनी और मेंटल स्ट्रेस जैसी समस्याएं पैदा होती हैं। अधिक शोर से कान के आंतरिक भाग को नुकसान भी हो सकता है।महिलाओं ने ज्ञापन में बताया कि मुख्यमंत्री ने अपनी पहली कैबिनेट बैठक में पूरे मध्य प्रदेश के लिए धार्मिक स्थलों पर लाउडस्पीकर और खुली मांस बिक्री पर रोक के निर्देश जारी किए थे। लेकिन इन निर्देशों का पालन नहीं हो रहा है।

उनकी मांग है कि धार्मिक स्थलों से लाउडस्पीकर हटाए जाएं और खुली मांस बिक्री पर रोक लगाई जाए। कलेक्टर संजय जैन ने महिलाओं को आश्वासन दिया कि इस मामले में उचित कार्रवाई की जाएगी।

मऊगंज में मंदिर के पास शव दफनाने खोदा गड्ढा, हिंदू समुदाय ने जताई आपत्ति

अधिकारियों ने दूसरी जगह कराया अंतिम संस्कार

मीडिया ऑडीटर, मऊगंज (निप्र)। जिले में फिर से खजुरहन ग्राम पंचायत में जमीनी विवाद सामने आया है। सोमवार रात मंदिर परिसर के पास स्थित पुराने कब्रिस्तान में मुस्लिम समुदाय के अंतिम संस्कार के लिए गड्ढा खोदने को लेकर दोनों समुदाय आमने-सामने आ गए।

यह वही जमीन है, जिसको लेकर एक महीने पहले मंदिर विवाद चला था। उस समय एक महीने तक धरना प्रदर्शन हुआ था। कलेक्टर की समझाइश के बाद वह मामला शांत हुआ था।

विवाद तब शुरू हुआ जब मुस्लिम पक्ष ने विवादित भूमि पर शव दफनाने के लिए गड्ढा खोदा। हिंदू पक्ष ने इस पर आपत्ति जताई। उनका कहना था कि यह स्थान मंदिर के बहुत करीब है और धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाता है।सूचना मिलते ही संयुक्त कलेक्टर राजेश मेहता, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विक्रम सिंह समेत प्रशासनिक अधिकारी मौके पर पहुंचे। प्रशासन ने मुस्लिम पक्ष को कुछ दूरी पर कब्र खोदने की सलाह दी। मुस्लिम पक्ष इस बात पर राजी हो गया।

संयुक्त कलेक्टर राजेश मेहता ने हिंदु समुदाय से कहा, अभी अंतिम संस्कार शांति से हो जाने दो। कल मैं रिपोर्ट दे दूंगा। इंस्पेक्टर से जांच कराई गई है। जो जहां हो रहा है, उसे होने दो। हमने कब्रिस्तान को मंदिर से 20 की जगह 30 फीट दूर कर दिया। फिर रिपोर्ट आने दो। दो से तीन महीनों में सब ठीक हो जाएगा।इस दौरान एक ग्रामीण कहता है हमे तो बस निवेदन करना है। हम लोग तो लाठी चला नहीं सकते हैं, हम लोग विवाद नहीं कर सकते हैं, चाहे वो मंदिर में ले जाकर मिट्टी दे दें। तब भी हम लोग भी हम लोग नहीं बोलेंगे। इस अधिकारी कहते हैं नहीं-नहीं ऐसा कैसे करते हैं,वो भी नहीं कर सकते हैं। चलिए आप लोग जाइए, हम लोग तो यहां पर हैं।

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विक्रम सिंह ने बताया कि स्थिति अब पूरी तरह नियंत्रण में है। मुस्लिम पक्ष ने मंदिर से करीब 50 फीट दूर दूसरी जगह अंतिम संस्कार कर दिया है। सभी लोग अपने घर लौट गए हैं। सुरक्षा के लिए मौके पर पुलिस बल तैनात किया गया है।

वरिष्ठ नागरिक पेंशनर संगठन ने सौंपा ज्ञापन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। वरिष्ठ नागरिक पेंशनर संगठन जिला रीवा के मीडिया प्रभारी आबाद खान प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि हाल ही में केंद्र सरकार द्वारा केंद्रीय सिविल सेवा पेंशन नियमों में आठवें वेतनमान के संबंध में नियम पारित किया गया है जिसमें केंद्रीय कर्मचारियों को अनेक सुविधाओं से लाभान्वित किया गया है किंतु आठवें वेतनमान में पेंशनर विरोधी प्रावधान जिसके तहत सेवा निवृत्त टी की तिथि के आधार पर पेंशनरों को विभाजित करने की चेष्टा की गई है इसके तहत पेंशनरों को आठवें वेतनमान के लाभ से वंचित किया गया है जिसके तहत 1 जनवरी 2025 के पूर्व सेवानिवृत टी हुए कर्मचारियों को इसका लाभ नहीं दिया जा रहा।

नवीन सरस्वती शिशु मंदिर उतैली में स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। नगर पालिक निगम सतना के तत्वावधान में नवीन सरस्वती शिशु मंदिर उतैली में जागरूकता कार्यक्रम नगर पालिक निगम सतना के इंजीनियर धर्मेंद्र सिंह परिहार द्वारा आयोजित किया गया!

कार्यक्रम में धर्मेंद्र सिंह ने सभी से स्वच्छता का उत्कृष्ट माहौल बनाने में योगदान करने का अनुरोध किया, और उल्लेखित किया कि आज,हम सब सतना में हैं तो क्यों ना सतना में स्वच्छता का बेहतर माहौल बनाएं और कल हम जहां भी रहें,जिस भी शहर में रहें, जिस भी प्रदेश में रहें,जिस भी देश में रहें खुद भी स्वच्छता अपनाए और दूसरों से भी स्वच्छता का बेहतर माहौल बनाने का अनुरोध करें - न केवल वातावरण की स्वच्छता बल्कि मन की स्वच्छता भी,यानी सकारात्मक सोच, ईमानदारी, अनुशासन, कड़ी मेहनत, भ्रष्टाचार मुक्त समाज, नशा मुक्त समाज एवं अपराध मुक्त समाज बनाने का प्रयास करें! सभी छात्र छात्राओं ने मंत्र मुग्ध होकर जागरूकता अभियान कार्यक्रम का लुफ्त उठाया!कार्यक्रम में डायरेक्टर चुन्नीलाल पटेल, प्रिंसिपल मिथिलेश कुमार पटेल, अध्यापक पूर्णेन्द्र सिंह, अमित सिंह, प्रियंका शुक्ला, शिवानी गौतम,प्रवीण सिंह, स्वाति सिंह तथा स्कूल परिवार के अन्य लोगों तथा छात्र-छात्राओं में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया!

कार्यक्रम में तन मन की स्वच्छता संबंधी विभिन्न पहलुओं पर रोशनी डाली गई ! कार्यक्रम में इंजीज्धर्मेंद्र सिंह द्वारा सभी से अपनी अपनी गली के लोगों को गीले कचरे एवं सूखे कचरे को हरी और नीली डस्टबिन के माध्यम से ही कचरा मांगने वाली गाड़ी को देने का तथा घरेलू हानिकारक कचरे को अलग तथा सेनेटरी नैपकिन डायपर को अलग अलग कर कुल चार हिस्से में अलग करके कचरा मांगने वाली गाड़ी को ही देने का अनुरोध किया गया! सभी से लिंक के माध्यम से स्वच्छ सर्वेक्षण सिटिजन फीडबैक देने का अनुरोध किया गया! अपने घरों से निकलने वाले सब्जी,फल,फूल के कचरे को मटका विधि से होम-कंपोस्टिंग करके खाद में बदलने का अनुरोध किया गया! स्वर्निर्मित कंपोस्ट खाद के उपयोग से अधिक से अधिक फल,फूल, सब्जी, विभिन्न पौधे तथा वृक्ष उगा कर शहर में हरियाली बढ़ाने के साथ-साथ वायु में ऑक्सीजन का स्तर भी बेहतर करने में सभी के योगदान का अनुरोध किया गया!

कार्यक्रम में मतदाता जागरूकता, पर्यावरण संरक्षण विशेष रूप से जल संरक्षण, नशा मुक्त भारत अभियान,भ्रष्टाचार मुक्त समाज और अपराध मुक्त समाज की दिशा में प्रयास करने के संबंध में भी चर्चा हुई!

नवीन सरस्वती शिशु मंदिर उतैली परिवार के सभी उपस्थित स्टाफ के सदस्यों एवं छात्र-छात्राओं ने सतना में बेहतर स्वच्छता का माहौल बनाने का तथा अपने गली मोहल्ले के अन्य लोगों को जागरूक करने का संकल्प लिया! अंत में स्कूल परिवार द्वारा इंजीज्धर्मेंद्र सिंह के प्रति आभार प्रदर्शित किया गया!

नगरीय निकायों में भी चलाया जा रहा जल गंगा संवर्धन अभियान

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा जिले में ग्रामीण क्षेत्रों के साथ-साथ नगरीय निकायों में भी 30 मार्च से 30 जून तक जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत तालाबों तथा नदियों की साफ-सफाई एवं हैण्डपंपों में रिचार्ज पिट बनाए जा रहे हैं। मकानों में वाटर हार्वेस्टिंग संरचनाएं भी बनवाई जा रही हैं। नगर परिषद मनगवां में जनप्रतिनिधियों तथा सफाई कर्मियों ने मलकपुर तालाब की साफ-सफाई में श्रमदान किया। नगर परिषद गुढ़ में कष्टहरनाथ मंदिर के समीप नदी में साफ-सफाई कराई जा रही है। नगर परिषद के कर्मचारियों तथा पीएचई विभाग के कर्मचारियों ने तीन हैण्डपंपों में सुधार कराकर उन्हें चालू कराया। हैण्डपंपों में सोकपिट का भी निर्माण कराया जा रहा है। वार्ड क्रमांक 6 में मदुलियन मंदिर परिसर की साफ-सफाई कराई गई। नगर परिषद चाकघाट, नगर परिषद डभौरा तथा नगर परिषद गोविंदगढ़ में जल संरक्षण और संवर्धन के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। साथ ही हैण्डपंपों में रिचार्ज पिट बनाए जा रहे हैं।

दिल्ली वर्ल्ड पब्लिक स्कूल में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया अंतरराष्ट्रीय मातृ पृथ्वी दिवस

मीडिया ऑडीटर, चिरमिरी (निप्र)। शहर के प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थान दिल्ली वर्ल्ड पब्लिक स्कूल में सोमवार को अंतरराष्ट्रीय मातृ पृथ्वी दिवस बड़े ही उत्साहपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम में प्री-प्राइमरी से लेकर कक्षा पाँचवीं तक के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया तथा विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

विद्यालय परिसर को विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए आकर्षक पोस्टरों और चित्रों से सजाया गया, जिससे पूरा वातावरण प्रकृति प्रेम से सराबोर हो गया। नर्सरी कक्षा के बच्चों ने बीज रोपण कर हरियाली का महत्व बताया, वहीं केजी-1 के बच्चों ने हस्तनिर्मित वृक्ष की कलाकृतियाँ प्रस्तुत कीं। केजी-2 के विद्यार्थियों ने पर्यावरण विषय पर संगीतमय नाट्य प्रस्तुति देकर भू-संरक्षण और प्लास्टिक के दुरुपयोग से बचने का संदेश दिया।कक्षा एक से पाँचवीं तक के विद्यार्थियों ने स्लोगन लेखन, पोस्टर निर्माण तथा चित्रकला प्रतियोगिता में बढ़-चढ़कर भाग लिया। बच्चों की रचनात्मकता ने सभी का मन मोह लिया।

इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य डॉ. बसंत कुमार तिवारी ने कहा, "विश्व पृथ्वी दिवस न केवल पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता को रेखांकित करता है, बल्कि हमें यह भी सिखाता है कि छोटी-छोटी आदतें बड़े बदलाव ला सकती हैं। बिजली की बचत, पानी का संरक्षण, प्लास्टिक का सीमित प्रयोग और स्वच्छता जैसे प्रयास पृथ्वी को बचाने की दिशा में बेहद महत्वपूर्ण हैं।" उन्होंने सभी से पृथ्वी की रक्षा हेतु सजग रहने का आह्वान किया।

संस्था की निदेशिका श्रीमती पूनम सिंह ने भी इस अवसर पर विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा, "आज का दिन हमें प्रकृति के प्रति प्रेम, संवेदनशीलता और जिम्मेदारी का भाव सिखाता है। यदि हम आज से ही पर्यावरण की रक्षा के लिए संकल्प लें, तो भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक स्वच्छ और सुरक्षित पृथ्वी छोड़ सकते हैं।"कार्यक्रम के अंत में विद्यार्थियों और शिक्षकों ने पृथ्वी को सुरक्षित रखने का संकल्प लिया। विद्यालय द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम छात्रों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता और उत्तरदायित्व की भावना को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम रहा। दिल्ली वर्ल्ड पब्लिक स्कूल में सोमवार को अंतरराष्ट्रीय मातृ पृथ्वी दिवस बड़े उत्साह और पर्यावरणीय चेतना के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्री-प्राइमरी से लेकर कक्षा पाँचवीं तक के छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया और विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से पृथ्वी के संरक्षण का संदेश दिया। विद्यालय परिसर को विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए रंग-बिरंगे पोस्टरों और चित्रों से सजाया गया, जिससे चारों ओर प्रकृति के प्रति प्रेम और जिम्मेदारी की भावना झलकने लगी। नर्सरी के बच्चों ने बीज रोपण कर हरियाली की अहमियत बताई, जबकि केजी-1 के विद्यार्थियों ने हस्तनिर्मित वृक्ष कलाकृतियों के ज़रिए पर्यावरण से जुड़ाव दर्शाया। केजी-2 के छात्रों ने संगीतमय नाट्य प्रस्तुति के माध्यम से पृथ्वी के संरक्षण और प्लास्टिक प्रदूषण से बचने का संदेश दिया। कक्षा 1 से 5 तक के बच्चों ने स्लोगन लेखन, चित्रकला और पोस्टर निर्माण प्रतियोगिताओं में भाग लेकर अपनी रचनात्मकता का परिचय दिया। उनकी कलात्मक प्रतिभा और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील सोच ने सभी का मन मोह लिया। विद्यालय के प्राचार्य डॉ. बसंत कुमार तिवारी ने इस अवसर पर कहा, "विश्व पृथ्वी दिवस हमें यह याद दिलाता है कि छोटी-छोटी आदतें भी बड़े बदलाव ला सकती हैं। बिजली और पानी की बचत, प्लास्टिक का सीमित प्रयोग तथा स्वच्छता जैसे प्रयास हमारे पर्यावरण की रक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।" उन्होंने सभी से पृथ्वी को बचाने के लिए सजग और सक्रिय रहने की अपील की।

संस्था की निदेशिका श्रीमती पूनम सिंह ने भी छात्रों को शुभकामनाएं देते हुए कहा, "आज का दिन हमें प्रकृति के प्रति प्रेम, दायित्व और जागरूकता का भाव सिखाता है। यदि हम आज से ही संकल्प लें, तो आने वाली पीढ़ियों को एक सुरक्षित और स्वच्छ पृथ्वी दे सकते हैं।"

कार्यालय नगर पालिक निगम रीवा, जिला- रीवा (म.प्र.)

//निविदा सूचना //

NIT क्रमांक 592/ई-निलामी/न.पा.नि./2025 रीवा, दिनांक 21.04.2025

निम्नलिखित कार्य हेतु केन्द्रीयकृत प्रणाली में पंजीकृत ठेकेदारों से ऑनलाईन निविदाएँ आमंत्रित की जाती हैं। निविदा का विस्तृत विवरण वेबसाइट **https://mptenders.gov.in** पर देखा जा सकता है।

क्र.	टेण्डर क्रमांक एवं जारीदिनांक तथा NIT क्रमांक/दिनांक	कार्य का नाम	कार्य की समयावधि एवं लागत	निविदा प्रपत्र का मूल्य एवं EMD	निविदा की अंतिम तिथि
1	2	3	4	5	6
1.	2025_UAD_417992_1 22.04.2025 [FIRST CALL] 586/21.04.2025	जोन क्रमांक-02 अंतर्गत वार्ड क्रमांक-09, में ई. डी. एम. रूम से पटेल हॉस्टल तकनाली निर्माण का कार्य ।	04 माह ₹41.02 लाख	₹5000.00 ₹30765.00	21.05.2025 18:00 बजे तक।
2.	2025_UAD_417993_1 22.04.2025 [FIRST CALL] 587/21.04.2025	जोन क्रमांक-02 अंतर्गत वार्ड क्रमांक-19, गंगा नगर घोघरमें श्री संतोष सोनी के घर से श्री सुन्दरिया माहौल के घर तक तथा अशोक खरोल के घर से श्रीमती राखी लोनिया के घर तक आरसीसी सड़क एवं नाली निर्माणका कार्य।	03 माह ₹15.29 लाख	₹2000.00 ₹11468.00	21.05.2025 18:00 बजे तक।
3.	2025_UAD_417994_1 22.04.2025 [FIRST CALL] 588/21.04.2025	जोन क्रमांक-02 अंतर्गत वार्ड क्रमांक-20, में रामलाल अंडावाला दुकान से गुलबसिया चौराहा एवं गुलहाई बाजार तक नाली निर्माण का कार्य ।	03 माह ₹18.72 लाख	₹2000.00 ₹14040.00	21.05.2025 18:00 बजे तक।
4.	2025_UAD_417995_1 22.04.2025 [FIRST CALL] 589/21.04.2025	जोन क्रमांक-02 अंतर्गत वार्ड क्रमांक-29, में लखन साइकार के घर से हजारी चौराहा एवं लाइब्रेरी तक नाली निर्माण का कार्य ।	03 माह ₹19.58 लाख	₹2000.00 ₹14685.00	21.05.2025 18:00 बजे तक।
5.	2025_UAD_417996_1 22.04.2025 [FIRST CALL] 590/21.04.2025	जोन क्रमांक-02 अंतर्गत वार्ड क्रमांक- 06, 07, 08, 17, 18, 19, 20, 29, 30 और 31 के विभिन्न स्थानों में आरसीसी नाली (मरम्मत एवं पीस वर्क) निर्माण का कार्य।	12 माह ₹29.00 लाख	₹5000.00 ₹21750.00	21.05.2025 18:00 बजे तक।
6.	2025_UAD_417997_1 22.04.2025 [FIRST CALL] 591/21.04.2025	जोन क्रमांक-02 अंतर्गत वार्ड क्रमांक- 06, 07, 08, 17, 18, 19, 20, 29, 30 और 31 के विभिन्न स्थानों में WBM सड़क (मरम्मत एवं पीस वर्क) निर्माण का कार्य।	12 माह ₹22.64 लाख	₹5000.00 ₹16980.00	21.05.2025 18:00 बजे तक।

नोट: – निविदा से संबंधित किसी भी प्रकार के संशोधन का प्रकाशन ऑनलाईन **https://mptenders.gov.in** की वेबसाइट पर ही किया जायेगा, पृथक से समाचार पत्र में प्रकाशन नहीं किया जावेगा।

कार्यपालन यंत्री (जोन क्र. 02)
नगर पालिक निगम
रीवा (म.प्र.)

विचार

10000 प्रशासनिक अधिकारियों के जिम्मे नागरिकों के मौलिक अधिकार

भारत में 21 अप्रैल को सिविल सर्विस डे मनाया जाता है। भारतीय संविधान ने नागरिकों के मौलिक अधिकारों को सुनिश्चित किया है। संविधान ने न्यायपालिका, विधायिका और कार्यपालिका के रूप में ब्रह्मा, विष्णु, महेश की तर्ज पर भारतीय संविधान की रचना की है। संविधान ने सभी की जिम्मेदारी तय की है। संविधान द्वारा न्यायपालिका विधायिका और कार्यपालिका को अधिकार और कर्तव्य दोनों ही सुनिश्चित किए गए हैं। संविधान निर्माताओं में से एक स्वतंत्र भारत के पहले गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल, ने 10 अक्टूबर 1949 को सिविल सेवा के अधिकारियों की भूमिका पर मार्गदर्शन देते हुए कहा था। मेरी सलाह है, आप पूरी स्वतंत्रता के साथ कार्य करें। यदि आप मुखिया हैं, तो अपने अधीनस्थ को स्वतंत्रता से बोलने का अवसर दें। अधिकारियों को बिना किसी डर या पक्षपात के अपने विचार रखने की आजादी है। यदि विचार रखने की स्वतंत्रता नहीं होगी, ऐसी स्थिति में भारत का नवनिर्माण नहीं हो सकता है। उन्होंने कहा कि मेरा सचिव यदि मेरे किसी विचार से सहमत नहीं है, तो भी वह अपने विचार पूरी स्वतंत्रता के साथ लिख सकता है। प्रशासनिक सेवा के अधिकारी किसी डर और भय के कारण स्पष्ट राय नहीं देते हैं। उसे लगता है, कि मंत्री या वरिष्ठ अधिकारी नाराज हो जाएंगे। ऐसी स्थिति में प्रशासनिक सेवा में रहने का कोई कारण नहीं है। पटेल ने प्रथम संबोधन में सांसदों से अपेक्षा की थी। प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों का सम्मान और उनके अच्छे कार्यों का समर्थन करें। यदि वह लापरवाही और गलत काम करते हैं। ऐसी स्थिति में शासन का ध्यान आकर्षित करें। अच्छे कार्यों की प्रशंसा करें। सरदार पटेल कठोर प्रशासक के रूप में जाने जाते है। स्वतंत्रता मिलने के पश्चात उन्होंने रियासतों को भारत में विलय करने के लिए जो कार्य किया था। उसकी प्रशंसा आज भी सारी दुनिया में होती है। उन्होंने भारतीय सेवा के अधिकारियों को सजाह देते हुए कहा था। प्रशासन को पूरी तरह से निष्पक्ष और भ्रष्टाचार मुक्त बनाएं। सिविल सेवा के अधिकारी को राजनीति में भाग नहीं लेना चाहिए। सांप्रदायिक विवादों में उसे दूर रहना चाहिए। भारतीय सेवा के अधिकारियों से उम्मीद की जाती है। वह बिना किसी डर या पक्षपात के बाहरी प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना अपना कार्य करेंगे। स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े नेताओं की पीढ़ी में भारतीय सेवा के अधिकारी बेहतर ढंग से संविधान के अनुरूप अपना कार्य कर रहे थे। भारत में जब से गठबंधन की सरकारें आना शुरू हुई हैं। उसके बाद भारतीय सेवा के अधिकारियों में भारी परिवर्तन देखने को मिल रहा है। वह सत्ता के दबाव और प्रलोभन के चलते अपनी भूमिका का सही ढंग से निर्वाह नहीं कर रहे हैं। यही नहीं कह पा रहे हैं। जिसके कारण भारत की कार्यपालिका मैं डर, भय, पक्षपात और भ्रष्टाचार अब सभी और देखने स्थिति विधायिका की हो गई है। जो अपने आप को संविधान से भी सर्वोपरि मानने लगी है।

राजनीति में एक सप्ताह काफी लबा समय माना जाता है

वर्ष के अंत में होने वाले बिहार चुनाव काफी अप्रत्याशित हैं। फिलहाल, भाजपा, राजद या जद (यू) के लिए कोई आसान रास्ता नहीं है। राजनीतिक दल चुनावों का सामना करने के लिए कमर कस रहे हैं। बिहार की राजनीति में चुपचाप मंथन चल रहा है। साा गतिशीलता में संभावित बदलाव हो सकता है। पिछले 2 दशकों से जद (यू) के बाद दूसरे स्थान पर रही भाजपा अब प्रमुख भूमिका पर नजर गड़ाए हुए है। राजद सरकार बनाना चाहती है। 2 महत्वपूर्ण शक्ति समूह लड़ाई में हैं। एक तरफ एन.डी.ए. और दूसरी तरफ महागठबंधन जिसमें राजद, कांग्रेस और वामपंथी दल शामिल हैं। पार्टी के अंदर और बाहर की गतिविधियां जोरों पर हैं। एन.डी.ए. और महागठबंधन एक उच्च-दाव राजनीतिक टकराव के लिए सोची-समझी चालें चल रहे हैं। उन राज्यों में लगातार जीत से उत्साहित, जहां संभावनाएं उसके खिलाफ थीं, दिल्ली जीतने के बाद अब भाजपा ने बिहार पर नजरें गड़ा दी हैं।

बिहार की जातिगत राजनीति दिलचस्प है। पिछड़े वर्गों की जनसंख्या 63.13 प्रतिशत है तथा उच्च जाति की जनसंख्या केवल 15.52 प्रतिशत है। अन्य पिछड़ा वर्ग, पिछड़ा वर्ग श्रेणी का 27.12 प्रतिशत है, जबकि अत्यंत पिछड़ा वर्ग की जनसंख्या 36 प्रतिशत है। दलितों की संख्या लगभग 19.65 प्रतिशत है और यादवों की संख्या 14.26 प्रतिशत है। नीतीश कुमार की कुर्मी जाति, जिसे ओ.बी.सी. के रूप में भी वर्गीकृत किया गया है, जनसंख्या का 2.87 प्रतिशत है। पिछले विधानसभा चुनावों में, लगभग 15 प्रतिशत आबादी वाली उच्च जातियों ने कई पार्टियों में टिकट वितरण पर अपना दबदबा कायम रखा। भाजपा ने 47.3 प्रतिशत टिकट ऊंची जाति के उम्मीदवारों को दिए, जबकि कांग्रेस ने 40 प्रतिशत सीटें ऊंची जातियों को दीं। 2020 के बिहार विधानसभा चुनावों में, महागठबंधन को 243 सदस्यीय विधानसभा में साधारण बहुमत नहीं मिला, वह सिर्फ 12 सीटों से चूक गया। राजद सदन में सबसे बड़ी पार्टी थी लेकिन सरकार नहीं बना सकी। 2025 के चुनावों के लिए जद (यू) ने नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री पद का चेहरा घोषित किया है। जाने-माने चुनाव विशेषज्ञ प्रशांत किशोर ने भविष्यवाणी की है कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार अपने राजनीतिक करियर के अंतिम चरण में हैं। वहीं, राजद ने अपने नेता तेजस्वी यादव को चुना है। कांग्रेस ने अभी तक अपने पत्ते नहीं खोले हैं। कांग्रेस और राजद के बीच बैठकों का दौर जारी रहा। जद (यू) और भाजपा गठबंधन वर्तमान में बिहार में शासन कर रहे हैं।

नीतीश कुमार का बिगड़ता स्वास्थ्य, जातिगत संतुलन और गठबंधन की कार्यप्रणाली-ये कारक, विशेषकर नीतीश कुमार का गिरता स्वास्थ्य, बिहार को राजनीतिक रूप से अप्रत्याशित बनाते हैं। यदि भाजपा उन्हें मुख्यमंत्री चुनती है, तो भी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के कारण भीड़ से प्रभावी ढंग से जुडने में उनकी असमर्थता चुनाव परिणाम को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती है। जद (यू) भाजपा के साथ अधिक सीटों के लिए सौदेबाजी करना चाहती है। 2020 में, जद (यू) ने 115 सीटों पर चुनाव लड़ा, लेकिन केवल 43 पर जीत हासिल की। इसके विपरीत, भाजपा ने 110 सीटों पर चुनाव लड़ा और 74 पर जीत हासिल की। राजद, कांग्रेस और कुछ छोटे दलों वाले महागठबंधन ने कड़ा विरोध किया। गठबंधन को आगे बढ़ाने के लिए पिछले सप्ताह दिल्ली में राजद और कांग्रेस के शीर्ष नेताओं की बैठक हुई थी।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह 2 दिनों के बिहार दौरे पर आए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आगामी 24 अप्रैल 2025 को मधुबनी दौरा है, जहां उन्होंने नीतीश कुमार को 'करेला मुख्यमंत्री' कहा। राजद प्रमुख लालू प्रसाद यादव ने एक आश्चर्यजनक घोषणा करते हुए कहा कि वह अपने समाजवादी सहयोगी नीतीश कुमार के साथ सुलह करने के लिए तैयार हैं। जवाब में नीतीश ने कहा कि उन्होंने अनजाने में राजद के साथ गठबंधन कर लिया था। हालांकि, तेजस्वी यादव ने कहा कि महागठबंधन में नीतीश के लिए कोई जगह नहीं है। भारतीय विपक्षी ब्लॉक ने राजद नेता और बिहार के पूर्व उप-मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव को आगामी बिहार विधानसभा चुनावों के लिए अपनी समन्वय समिति का प्रमुख नियुक्त किया है। यह निर्णय 17 अप्रैल को पटना में गठबंधन के 6 सहयोगियों की बैठक के दौरान लिया गया।

महागठबंधन में शामिल कांग्रेस और वामपंथी दल इस बात से चिंतित हैं कि राजद सीट बंटवारे पर अंतिम निर्णय लेने के लिए अंतिम क्षण तक इंतजार करेगी। कांग्रेस पार्टी 2020 में उन्हें दिए गए कमजोर निर्वाचन क्षेत्रों से नाखुश है। पिछले चुनाव में उन्होंने 70 सीटों में से केवल 19 पर जीत हासिल की थी। सी.पी.आई. (एम.एल.), जिसने 2020 में अच्छा प्रदर्शन किया था, सीटों का बड़ा हिस्सा चाहती है। 2005 के बाद से, 2015 और 2022 की छोटी अवधि को छोड़कर, राजद को सत्ता हासिल करने में कठिनाई हो रही है। फिलहाल तेजस्वी यादव के सामने 2 मुख्य कार्य हैं। सबसे पहले, उन्हें अपने समर्थन को मुस्लिम और यादवों के मूल समूहों से आगे बढ़ाकर अन्य जातियों तक पहुंचाना होगा। इसमें एक मजबूत जमीनी स्तर का अभियान शामिल है। यह अब विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि पारंपरिक मतदान की प्रवृत्तियां बदल रही हैं।

मुख्य दलों को अपने समूहों के भीतर और बाहर दोनों तरफ से चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है तथा एक महत्वपूर्ण राजनीतिक परिवर्तन की उम्मीद है। ध्यान देने वाली बात यह है कि नीतीश कुमार का ई.बी.सी. एकजुट है और राजद-सह-कांग्रेस गठबंधन को चुनौती दे रहा है। नवंबर से पहले और भी कई बदलाव हो सकते हैं। उन्हें देखना दिलचस्प होगा। राजनीति में एक सप्ताह काफी लम्बा समय माना जाता है। 6 महीने वास्तव में बहुत लंबा समय है।-कल्याणी शंकर

भारत के उद्यमियों को सशक्त बनाना- मुद्रा ऋण की परिवर्तनकारी भूमिका

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एम.एस. एम.ईज.) के विस्तार के साथ आर्थिक प्रगति हुई है। यह क्षेत्र न केवल हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, बल्कि रोजगार सृजन और गांव में नवाचार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस क्षमता को पहचानते हुए भारत सरकार ने प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना (पी.एम.एम.वाई.) शुरू की है, जिसे मुद्रा ऋण के रूप में जाना जाता है।

आज, मुद्रा लोन दुनिया के लिए एक वायरल वित्तीय रेखा बन गई है और इससे जीवनयापन को महत्व और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिल रहा है। एक दशक पूरा होने पर, इसका प्रभाव भारत भर में अर्ध-शहरी, ग्रामीण और पिछड़े इलाकों की अर्थव्यवस्थाओं के परिवर्तन में स्पष्ट है। अपनी शुरूआत से ही पी.एम.एम.वाई. योजना ने 51 करोड़ खातों में 32 ट्रिलियन के ऋण की सुविधा प्रदान की है, जिससे हाशिए पर पड़े समुदायों को काफी लाभ हुआ है। उल्लेखनीय रूप से इनमें से लगभग 50 प्रतिशत ऋण एस.सी./एस.टी./ओ.बी.सी. उधारकर्त्ताओं द्वारा लिए गए हैं, जबकि 68 प्रतिशत ने महिला उद्यमियों को सशक्त बनाया है, जिससे वित्तीय समावेशन में इसकी भूमिका मजबूत हुई है।

आजीविका को सशक्त बनाना = मुद्रा ऋण योजना की संकल्पना तीन श्रेणियों 'शिशु' (50,000 तक के ऋण), 'किशोर' (2,50,000 से 5 लाख तक के ऋण) और 'तरुण' (5 लाख से 10 लाख तक)को साकार करना है। सफल एम.एस.ईज की उभरती जरूरतों को पहचानते हुए, सरकार ने अक्तूबर 2024 में एक नई श्रेणी-तरुण मुद्रा शुरू की, जिससे मुद्रा ऋण की सीमा 20 लाख हो गई। यह संरचित दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करता है कि विभिन्न विकास चरणों में व्यवसायों को उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप आवश्यक वित्तीय सहायता प्राप्त हो। कई छोटे व्यवसाय मालिकों, स्ट्रीट वैंडर्स, कारीगरों और ग्रामीण उद्यमियों के लिए औपचारिक ऋण तक पहुंच एक चुनौती थी। मुद्रा ऋणों ने बैंकिंग अंतराल को पाटने और नए विकास के अवसरों को खोलकर, छोटे उद्यमियों और स्वरोजगार करने वालों, जैसे कि करियाना स्टोर मालिकों, कारीगरों और टियर-2 शहरों में तकनीकी स्टार्टअप को सशक्त बनाया है। मुद्रा योजना के शुभारंभ के बाद से, पंजाब नैशनल बैंक (पी.एन.बी.) ने 64.5 लाख से अधिक ऋण खातों में 1.35 ट्रिलियन को मंजूरी दी है, जो इसकी पुष्टि करता है।

महिला उद्यमिता का विकास करना = मुद्रा लोन के वितरण में एक उल्लेखनीय प्रवृत्ति यह देखी गई है कि महिला उद्यमियों की भागीदारी बढ़ रही है।

अमरीकी टैरिफ नीतियों का भारत और विश्व पर प्रभाव

वैश्विक व्यापार में संरक्षणवाद का दौर एक बार फिर से उभर रहा है। अप्रैल 2025 में अमरीकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा घोषित 'पारस्परिक टैरिफ' (रेसीप्रोकल टैरिफ) नीति ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को हिला दिया है। इस नीति के तहत, भारत पर 27 प्रतिशत का टैरिफ लगाया गया है, जबकि अन्य देशों जैसे चीन, वियतनाम और यूरोपीय संघ पर भी भारी टैरिफ थोपे गए हैं। यह नीति अमरीका के व्यापार घाटे को कम करने और घरेलू उद्योगों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से लागू की गई है, लेकिन इसके दूरगामी परिणाम भारत और विश्व की अर्थव्यवस्थाओं पर पड़ रहे हैं। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रो. अरुण कुमार इस नीति के प्रभावों का विश्लेषण करते हुए बताते हैं कि अमरीका ने अपनी टैरिफ नीति को 'पारस्परिक' करार देते हुए कहा है कि यह अन्य देशों द्वारा अमरीकी वस्तुओं पर लगाए गए टैरिफ और गैर-टैरिफ बाधाओं (जैसे मुद्रा हेरफेर और नियामक अंतर) के जवाब में उठाया गया कड़ा कदम है।

ट्रम्प प्रशासन का दावा है कि भारत अमरीकी वस्तुओं पर 52 प्रतिशत का प्रभावी टैरिफ लगाता है, जिसके जवाब में भारत से आयात पर 27 प्रतिशत का टैरिफ लगाया गया है। हालांकि, इस गणना की सटीकता पर सवाल उठाए गए हैं। मिंट की एक रिपोर्ट के अनुसार, अमरीका ने व्यापार घाटे और आयात मूल्य के आधार पर टैरिफ दरें तय कीं, जो कि विश्व व्यापार संगठन के डाटा से मेल नहीं खातीं। भारत की अमरीकी वस्तुओं पर औसत टैरिफ दर 2023 में केवल 9.6 प्रतिशत थी, जो अमरीकी दावों से काफी कम है।

इस नीति में 2 स्तर के टैरिफ शामिल हैं। 5 अप्रैल से सभी देशों पर 10 प्रतिशत का आधारभूत टैरिफ और 9 अप्रैल से देश-विशिष्ट टैरिफ। कुछ वस्तुओं जैसे फार्मास्यूटिकल्स, अर्धचालक और ऊर्जा उत्पादों को टैरिफ से छूट दी गई है, जिससे भारत के कुछ क्षेत्रों को राहत मिली है। भारत जो अमरीका का एक प्रमुख व्यापारिक सांझेदार है, 2024 में 80.7 बिलियन डॉलर का माल अमरीका को निर्यात करता था। 27 प्रतिशत टैरिफ से भारत के कई क्षेत्र प्रभावित होंगे, लेकिन कुछ क्षेत्रों को प्रतिस्पर्धात्मक लाभ भी मिल सकता है। उधर भारतीय कपड़ा उद्योग को मिश्रित प्रभाव का सामना करना पड़ेगा। हालांकि भारत पर टैरिफ वियतनाम (46 प्रतिशत) और बंगलादेश (37 प्रतिशत) की तुलना में कम है, फिर भी बाजार और मुनाफे में कमी का जोखिम बना रहेगा।

वहीं भारत के 9 बिलियन डालर के फार्मास्यूटिकल निर्यात को टैरिफ से छूट दी गई है, जिससे इस क्षेत्र को राहत मिली है। भारतीय फार्मा कंपनियों के शेयरों में 5 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई। हालांकि सॉफ्टवेयर सेवाएं प्रत्यक्ष रूप से टैरिफ से प्रभावित नहीं हैं, लेकिन वीजा प्रतिबंध और व्यापार तनाव भारतीय आई.टी. कंपनियों जैसे टी.सी.एस. और इंफोसिस

के लिए चुनौतियां पैदा कर सकते हैं। टैरिफ के कारण भारत के निर्यात में 30-33 बिलियन डालर की कमी आ सकती है। अर्थशास्त्रियों ने भारत की 2025-26 की विकास दर को 20-40 आधार पर कम करके 6.1 प्रतिशत कर दिया है।

हालांकि, भारत सरकार का दावा है कि यदि तेल की कीमतें 70 डालर प्रति बैरल से नीचे रहती हैं, तो 6.3-6.8 प्रतिशत की विकास दर हासिल की जा सकती है। अमरीकी टैरिफ नीति का वैश्विक अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ेगा। प्रो. कुमार के अनुसार, यह नीति वैश्विक व्यापार प्रणाली में 1930 के स्मूट-हॉले टैरिफ एक्ट के समान व्यवधान पैदा कर सकती है। टैरिफ से वैश्विक व्यापार की गति धीमी होगी, जिससे आर्थिक विकास प्रभावित होगा। जे.पी. मॉर्गन ने चेतावनी दी है कि यदि यही टैरिफ नीति लागू रहती है, तो अमरीका और वैश्विक अर्थव्यवस्था मंदी में आ सकती है। इससे आयातित वस्तुओं की कीमतें बढ़ेंगी, जिससे अमरीका में मुद्रास्फीति बढ़ सकती है। बोस्टन फैडरल रिजर्व बैंक का अनुमान है कि टैरिफ से कोर पी.सी.ई. मुद्रास्फीति में 0.5-2.2 प्रतिशत की वृद्धि हो सकती है। वैश्विक शेयर बाजारों में गिरावट और मुद्रा अस्थिरता पहले ही देखी जा चुकी है।

चीन, यूरोपीय संघ और अन्य देशों ने अमरीकी वस्तुओं पर जवाबी टैरिफ की घोषणा की है, जिससे वैश्विक व्यापार युद्ध की आशंका बढ़ गई है। इससे आपूर्ति श्रृंखलाएं बाधित होंगी और व्यवसायों को लागत बढने का सामना करना पड़ेगा। कम प्रति व्यक्ति आय वाले देश जैसे कंबोडिया (50 प्रतिशत टैरिफ) सबसे अधिक प्रभावित होंगे। इससे अमरीका की विकासशील देशों में साख को नुकसान हो सकता है। भारत को इस संकट को अवसर में बदलने के लिए रणनीतिक कदम उठाने चाहिएं। भारत को अमरीका के साथ व्यापार समझौते पर तेजी से काम करना चाहिए। 23 बिलियन डालर के अमरीकी आयात पर टैरिफ कम करना एक शुरूआत हो सकती है। यूरोपीय संघ, आसियान और मध्य पूर्व जैसे वैकल्पिक बाजारों पर ध्यान देना चाहिए। भारत-ई.यू. मुक्त व्यापार समझौते को तेज करना महत्वपूर्ण होगा। आत्मनिर्भर भारत और 'मेक इन इंडिया' जैसी पहलों को मजबूत करके घरेलू उत्पादन और खपत को बढ़ावा देना चाहिए। छोटे और मध्यम उद्यमों के लिए सबसिडी, कर राहत और निर्यात प्रोत्साहन योजनाओं को लागू करना चाहिए।

अमरीकी टैरिफ नीति ने वैश्विक व्यापार में अनिश्चितता का माहौल पैदा किया है। भारत के लिए यह एक चुनौती होने के साथ-साथ अवसर भी है। प्रो. कुमार का मानना है कि यदि भारत रणनीतिक रूप से कार्य करे, तो वह न केवल इन टैरिफों के नकारात्मक प्रभावों को कम कर सकता है, बल्कि वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में अपनी स्थिति को भी मजबूत कर सकता है। दीर्घकालिक दृष्टिकोण और सुधारों के साथ, भारत इस संकट को एक नए आर्थिक युग की शुरूआत में बदल सकता है।

रायपुर में फिल्म मेकर अनुराग कश्यप पर FIR

ब्राह्मण समुदाय पर आपत्तिजनक टिप्पणी से भड़के लोग

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

रायपुर में फिल्ममेकर अनुराग कश्यप के खिलाफ FIR दर्ज हुई है। ब्राह्मण समुदाय पर आपत्तिजनक टिप्पणी मामले में सिटी कोतवाली थाने में केस दर्ज किया गया है। रायपुर में सोमवार को समाज के लोगों ने विरोध प्रदर्शन किया था। डायरेक्टर पर आरोप है कि उनके आपत्तिजनक बयानों से ब्राह्मण समुदाय की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंची है। जिसके चलते रायपुर के ब्राह्मण समाज ने सोमवार को अनुराग कश्यप के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की मांग को लेकर सिटी कोतवाली में शिकायत की थी। राष्ट्रीय ब्राह्मण महासंघ की शिकायत पर डायरेक्टर पर FIR दर्ज हुई है। संगठन के प्रमुख पंडित नीलकंठ त्रिपाठी ने कहा है कि, ब्राह्मण समाज पर जातिगत अभद्रभाषा में टिप्पणी करने की वजह से समाज की भावनाएं आहत हुई है। शिकायत पर रायपुर की सिटी कोतवाली पुलिस ने फिल्ममेकर अनुराग कश्यप के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता के धारा 196 और 302 के तहत केस दर्ज किया है। धर्म, जाति, भाषा आदि के आधार पर विभिन्न समूहों के बीच नफरत को बढ़ावा देने के बारे में है। सद्भाव बनाए रखने में प्रतिकूल प्रभाव डालने वाले एक्शन भी इसमें शामिल है। वहीं, धारा 302 जानबूझकर किसी व्यक्ति की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने के इरादे से शब्द, आवाज या संकेत आदि के प्रयोग से संबंधित है।दरअसल, समाज सुधारक ज्योतिबा फुले और सावित्री बाई फुले की जिंदगी पर एक फिल्म बनी है। इस फिल्म की रिलीज डेट टालने को लेकर अनुराग कश्यप भड़क गए थे।

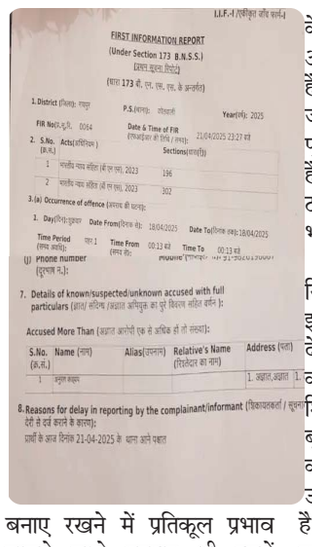

FIRST INFORMATION REPORT
(Under Section 173 B.N.S.S.)

डायरेक्टर ने ब्राह्मणों के खिलाफ अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल किया था। इसी के कारण देश भर में ब्राह्मण समाज के लोग कश्यप के खिलाफ पुलिस में शिकायत कर रहे भाजपा सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने अनुराग कश्यप को सख्त नसीहत दी है। उन्होंने कहा है, अगर भारत में रहना है तो भारत के साथ चलना होगा। कुछ लोग जाति, संप्रदाय के नाम पर विद्वेष फैलाना चाहते हैं। ऐसे लोगों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए।

ये है पूरा मामला- अनुराग कश्यप की फिल्म 'फुले' 11 अप्रैल को रिलीज होनी थी। हालांकि, जातिवाद के आरोप के बाद फिल्म के रिलीज डेट को टालना पड़ा है। सेंसर बोर्ड ने भी फिल्म में कई बदलाव किए हैं। इसकी रिलीज में देरी और CBFC के बदलावों से परेशान होकर अनुराग ने केंद्र सरकार, ब्राह्मण समुदाय और सेंसर बोर्ड ऑफ फिल्म सर्टिफिकेशन पर चंद पोस्ट शेयर की थीं। इसके बाद अनुराग कश्यप को सोशल मीडिया पर आलोचना का सामना करना पड़ा। अनुराग पर निशाना साधते हुए एक यूजर ने लिखा था- ब्राह्मण तुम्हारे बाप हैं, जितना तुम्हारी उनसे सुलगती, उतना तुम्हारी सुलगाएंगे। इसका जवाब देते हुए डायरेक्टर ने आपत्तिजनक शब्दों का इस्तेमाल किया था।

लिव-इन-रिलेशन में रह रही युवती से मारपीट

संबंध बनाने के बाद शादी से किया इनकार; रेप केस में युवक भेजा गया जेल

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

सरगुजा में युवक शादी का वादा कर युवती के साथ लिव-इन-रिलेशन में रहने लगा। तीन महीने में ही युवक ने युवती से मारपीट शुरू कर दी। युवती ने युवक से शादी करने के लिए कहा तो वह मुकर गया। युवती की रिपोर्ट पर पुलिस ने युवक के खिलाफ रेप और मारपीट का जुर्म दर्ज किया है। मामला दरिमा थाना क्षेत्र का है। युवक की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। जानकारी के मुताबिक, दरिमा थाने में युवती ने 19 अप्रैल को रिपोर्ट दर्ज कराई कि नावानगर निवासी राकेश सारथी उर्फ सोनू 20से युवती की पहचान हुई और दोनों के बीच बातचीत होती थी। राकेश सारथी ने युवती को शादी करने का झांसा दिया। उसने 31 दिसंबर 2024 को युवती के साथ शारीरिक संबंध बनाए। शादी का आश्वासन मिलने पर युवती उसके साथ लिव इन रिलेशन में रहने लगी।युवती ने बताया कि उसने राकेश सारथी से शादी करने के लिए कहा तो उसने गाली-गलौज करते हुए मारपीट की और जान से मारने की धमकी दी। राकेश उसके साथ आए दिन विवाद करता था। 10 अप्रैल की शाम को भी राकेश सारथी ने उसके साथ विवाद करते हुए मारपीट की, जिसके बाद युवती अपने घर चली गई।युवती ने मामले की रिपोर्ट दरिमा थाने में दर्ज कराई। रिपोर्ट पर पुलिस ने धारा 69, 296, 3153, 115(2) बी.एन.एस. का अपराध दर्ज किया। इस बीच आरोपी राकेश सारथी फरार हो गया। पुलिस ने पतासाजी के बाद राकेश सारथी को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी ने अपना जुर्म कबूल कर लिया। दरिमा थाना प्रभारी शशिकांत सिन्हा ने बताया कि आरोपी को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया गया, जहां से उसे न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया गया है।

कोर्ट परिसर में भिड़ गईं देवरानी-जेठानी

रायगढ़ में बच्ची को साथ ले जाने खींचने लगी मां, रोती रही मासूम

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिला कोर्ट परिसर में देवरानी-जेठानी आपस में भिड़ गई। दोनों बच्ची को अपने साथ ले जाने के लिए खींचने लगी। न्यायालय के आदेश के बाद बच्ची को उसकी मां (देवरानी) से मिलाने लाया गया था, लेकिन बच्ची को उसकी मां जबरन अपने साथ ले जाने लगी। इस दौरान जेठानी सरस्वती प्रधान ने रोका तो देवरानी सावित्री प्रधान ने मारपीट कर शुरू कर दी। कोर्ट परिसर में ही देवरानी-जेठानी एक दूसरे पर हमला और छीना-झपटी कर रहे हैं। बच्ची रो रही है। हंगामे का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। मामला चक्रधर नगर थाना क्षेत्र का है। जानकारी के मुताबिक ग्राम विश्वनाथ पाली निवासी सुबोध प्रधान पारिवारिक विवाद के कारण पत्नी सावित्री प्रधान से 4 साल से अलग रह रहा है। दोनों के तलाक का प्रकरण करीब एक साल से कुटुम्ब कोर्ट में चल रहा है। सुबोध की बेटी की उम्र 10 साल है। वह अपने पिता के पास ही रहती है। कोर्ट के आदेश पर उसका पालन पोषण पिता सुबोध प्रधान कर रहे हैं, लेकिन कोर्ट के आदेश पर सोमवार को उसकी मां सावित्री प्रधान से न्यायालय में मिलाना था। जहां सुबोध प्रधान, उसकी भाभी सरस्वती प्रधान और बड़ा भाई सुदामा प्रधान बच्ची को लेकर सावित्री प्रधान से मिलाने के लिए कोर्ट पहुंचे।सोमवार दोपहर करीब 1 बजे सभी बच्ची को उसकी मां के साथ मिलाकर घर वापसी के लिए निकल रहे थे। अचानक सावित्री अपनी बेटी को अपने साथ ले जाने के लिए उसे हाथ पकड़कर खींचने लगी, जिससे सावित्री और सरस्वती के बीच झूमा-झटकी हो गई।

शराब का नकली होलोग्राम-ढक्कन पकड़ाया

ढाबे और प्रिंटिंग शॉप से 40 हजार स्टिकर जब्त क्या अब ED-CBI करेगी इसकी जांच

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

रायपुर. रायपुर में शराब बोतलों में लगने वाला नकली होलोग्राम और ढक्कन पकड़ाया है। आबकारी विभाग ने टाटीबंध के एक ढाबा और बीरगांव की एक प्रिंटिंग शॉप में दबिश दी। यहां से करीब 40 हजार होलोग्राम और शराब के ढक्कन जब्त किए हैं। मामला आमानाका थाना क्षेत्र का है। इसके अलावा आरोपियों के पास से पेन ड्राइव और मोबाइल भी मिले हैं। जांच पड़ताल के बाद नकली होलोग्राम से जुड़े बड़े रैकेट का भी खुलासा होने की संभावना है। इस पर कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज ने पूछा कि क्या अब CBI, ED इसकी जांच करेगी। जेबा खान ने पुलिस को बताया कि वह टाटीबंध सर्किल की सहायक आबकारी अधिकारी है। 20 अप्रैल को उन्हें खुफिया इनपुट मिला। मुखबिर ने उन्हें बताया कि टाटीबंध बायपास रोड के पास तेंदुआ गांव में ढाबे पर अवैध शराब बिक रही है। इसके बाद आबकारी विभाग की टीम ने बीएच ढाबा में जाकर रेड मारी। इस दौरान मौके पर ढाबा मालिक संकट मोचन सिंह मिला। टीम ने जब तलाशी ली तो ढाबा में एक थैले से 105 पीस ढक्कन मिले। इसमें वेलकम डिस्टलरीज प्राइवेट लिमिटेड बिलासपुर, छत्तीसगढ़ डिस्टलरीज लिमिटेड के 165 स्पंज वायसर, 1460 नकली होलोग्राम, 1150 देसी शराब की बोतलें मिली।

प्रिंटिंग प्रेस से लाया था होलोग्राम

ढाबा मालिक से इन सामान को लेकर पूछताछ की गई। उसने बताया कि होलोग्राम को उसने बीरगांव के एक प्रिंटिंग शॉप से लिया था। इस पर आबकारी विभाग ने बीरगांव के प्रिंटर्स गणेश चौरसिया की दुकान पर रेड मारी। तलाशी लेने पर देसी शराब में उपयोग होने वाला नकली होलोग्राम की 371 शीट मिली। इस शीट में 40 हजार से ज्यादा नकली होलोग्राम थे। दुकान संचालक ने बताया कि उसे होलोग्राम छापने का ऑर्डर मिला था। टीम ने प्रिंटर्स के पास से मोबाइल और पेन ड्राइव जत किया है।

मोबाइल और पेन ड्राइव से पता चलेगा सरगना का नाम

बताया जा रहा है कि इन मोबाइल और पेन ड्राइव की जांच के बाद यह सामने आ पाएगा कि नकली होलोग्राम रैकेट का सरगना कौन है। यह किस तरह संचालित किया जाता था। फिलहाल दोनों आरोपियों को धोखाधड़ी के आरोप में गिरतार कर लिया गया है। इससे पहले 29 मार्च 2025 को राजनांदगांव जिले के डोंगरगढ़ थाना क्षेत्र के करवारी के फार्महाउस में 27 लाख की अवैध शराब जत की गई थी। पुलिस ने अब तक इस मामले में 14 आरोपियों को गिरतार किया है। अवैध शराब पहुंचने वाले कंटेनर वाहन के चालक और नकली होलोग्राम, स्टिकर, ढकन उपलध कराने वाले आरोपी की गिरतारी हुई है।

65 लाख की मर्चुरी में सभी फ्रीजर खराब

मनेंद्रगढ़ में स्वास्थ्य सेवाओं का बुरा हाल, शव से आ रही बदबू से परिजन परेशान

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

छत्तीसगढ़ के स्वास्थ्य मंत्री श्यामबिहारी जायसवाल के विधानसभा क्षेत्र मनेंद्रगढ़ में स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति चिंताजनक है। यहां 65 लाख रुपए की लागत से बनाए गए चीर घर में सभी पांच फ्रीजर खराब पड़े हैं। ताजा मामले में, 21 अप्रैल की शाम एक ग्रामीण के डैम में डूबने से मौत हो गई। मृतक के शव को खराब फ्रीजर में रखा गया। अगले दिन सुबह जब परिजन शव लेने पहुंचे, तो शव से इतनी तेज बदबू आ रही थी कि वे पास भी नहीं जा सके। परिजनों का कहना है कि खराब फ्रीजर में रखे जाने के कारण शव की स्थिति खराब हो गई है। वे चिंतित हैं कि इस स्थिति में शव को घर ले जाना और अंतिम संस्कार करना मुश्किल होगा।यह पहला मामला नहीं है। कुछ दिन पहले भी मनेंद्रगढ़ के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में मर्चुरी की सुविधा न होने के कारण परिजनों को शव की रखवाली करनी पड़ी थी। इससे पहले एक मामला पोस्टमार्टम के लिए 1300 रुपये की अवैध वसूली का भी सामने आया था।स्वास्थ्य विभाग की इस लापरवाही से मृतकों के परिजनों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। स्वास्थ्य मंत्री के अपने क्षेत्र में ही ऐसी स्थिति चिंता का विषय है।

दिव्यांग बहनों को मिला व्हीलचेयर और वॉकर

कोरिया में घर पहुंच मिली सुविधा, खरीफ सीजन की तैयारियों को लेकर बैठक

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

कोरिया जिले के चरचा कॉलरी की रहने वाली दो दिव्यांग बहनों को व्हीलचेयर और वॉकर मिला है। आंचल 16 और मान्यता 14 की मां तिरोतमा ने अपनी बेटियों के लिए कलेक्टर से व्हीलचेयर और वॉकर की मांग की थी। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के सुशासन तिहार कार्यक्रम में यह आवेदन मिला था। प्रशासन ने तुरंत कार्रवाई करते हुए अधिकारियों को मौके पर भेजा। कलेक्टर चंदन त्रिपाठी ने निर्देश दिए। जिसके बाद प्रशासन की टीम ने ने घर पहुंचकर दोनों को व्हीलचेयर और वॉकर दी। वहीं, जिले में आगामी खरीफ सीजन की तैयारियों को लेकर कलेक्टर चन्दन त्रिपाठी ने सोमवार को महत्वपूर्ण बैठक ली। कलेक्टर ने धान की जगह दलहन और तिलहन फसलों को बढ़ावा देने पर जोर दिया। मूंग, उड़द, मूंगफली, तिल, सरसों और मक्का की खेती से किसानों की आमदनी बढ़ेगी। साथ ही पोषण और मिट्टी की गुणवत्ता में भी सुधार होगा।अधिकारियों को गांव-गांव जाकर किसानों को इन फसलों की खेती के लिए प्रेरित करने के निर्देश दिए गए। सरकार किसानों को उचित बाजार और समर्थन मूल्य पर खरीदी की सुविधा उपलब्ध कराएगी।नेशनल मिशन ऑन एडिबल ऑयल 2025-26 के तहत तिलहन उत्पादन को प्राथमिकता दी जाएगी। रकबा बढ़ने पर जिले में तेल मिल की स्थापना का प्रयास किया जाएगा। इससे स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। उपभोक्ताओं में जैविक उत्पादों की मांग बढ़ रही है। इससे किसानों को बेहतर दाम मिलेंगे और जमीन भी उपजाऊ रहेगी।खाद-बीज की उपलब्धता और वितरण व्यवस्था की निगरानी की जाएगी। फसल बीमा योजना के ऑप्ट आउट विकल्प पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। वनाधिकार पट्टाधारी किसानों को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि से जोड़ा जाएगा। मिलेट्स की खेती के लिए कार्ययोजना तैयार की जाएगी।कोरिया में 2 दिव्यांग बहनों को व्हीलचेयर मिलने से उनका दैनिक जीवन और आसान हो गया है।

रिटायर्ड प्रिंसिपल समेत 3 लोगों की डूबने से मौत

मॉर्निंग-वॉक पर निकले थे, दादी के साथ नहाने गई दो बहनें डूबी

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

बिलासपुर. छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में रिटायर्ड प्राचार्य और दो सगी बहनों की तालाब में डूबने से मौत हो गई। रिटायर्ड प्रिंसिपल मॉर्निंग वॉक पर साइकिल से निकले थे, लेकिन घर नहीं लौटे। मोबाइल लोकेशन और सीसीटीवी वीडियो की मदद से पुलिस ने उनका लोकेशन ट्रेस किया, तब पता चला कि तालाब के पास उनके पकड़े पड़े हैं। जब तालाब में जाल डाला गया तो उनकी लाश मिली। वहीं, तखतपुर के गिरधौना निवासी चांदनी जायसवाल 13 और पार्वती जायसवाल 11 मंगलवार की सुबह 8 बजे अपनी दादी के साथ चंडीपारा तालाब नहाने गई थी। दादी कपड़ा धोकर घर आ गई। बच्चियां नहाते समय डूब गईं। काफी समय तक घर नहीं लौटने पर इसकी जानकारी हुई। बिलासपुर के सरकंडा थाना क्षेत्र के अशोक नगर-खमतराई रोड स्थित शर्मा विहार कॉलोनी निवासी सुशील कुमार तिवारी 65 रिटायर्ड प्राचार्य थे। रोज की तरह वो सोमवार सुबह साढ़े 5.30 बजे घूमने के लिए साइकिल से निकले थे। सुबह 8.30 बजे तक जब वो घर नहीं पहुंचे तो पत्नी ने उनके मोबाइल पर कॉल किया। लेकिन, उनका मोबाइल बंद मिला। जिसके बाद उन्होंने आसपास के लोगों के साथ ही रायपुर में रहने वाले अपने बेटे को फोन किया। साथ ही पुलिस को घटना की जानकारी दी। इस दौरान पड़ोसी विनोद तिवारी उनकी पत्नी सुष्मिता तिवारी को लेकर सरकंडा थाने पहुंचे। उन्होंने गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई। विनोद तिवारी ने पुलिस की मदद से आसपास की दुकानों में लगे सीसीटीवी कैमरों की जांच की, तब रिटायर्ड प्राचार्य तिवारी साइकिल पर तालाब की तरफ जाते दिखे।

तालाब के पास मिले कपड़े, साइकिल-मोबाइल गायब

विनोद तिवारी दोपहर में पुलिस की टीम के साथ तालाब के पास पहुंचे, तब उनका कपड़ा मिला। लेकिन, साइकिल और मोबाइल गायब थे। इस पर उन्हें संदेह हुआ। तालाब में जाल डालकर देखा गया, तब पानी के अंदर से उनकी लाश निकली। पुलिस ने मंगलवार को उनके शव का पोस्टमॉर्टम कराया।

साइकिल और मोबाइल ले गए थे युवक...

बताया जा रहा है कि, साइकिलिंग के दौरान रिटायर्ड प्राचार्य को शौच लगा। लिहाजा, वो तालाब के पास गए, जहां शौच करने के लिए गए थे। इस दौरान पैर फिसलने से वो गहरे पानी में समा गए और उनकी मौत हो गई। वहां मौजूद एक युवक उनकी साइकिल को लावारिस देखकर उठाकर ले गया था। वहीं, दूसरा युवक उनके पेंट की जेब में रखे मोबाइल लेकर भाग गया था। पुलिस ने उन दो लड़कों को भी पकड़ लिया है।

दादी के साथ नहाने गई दो बहनें डूबी...

तखतपुर के गिरधौना निवासी ओमप्रकाश जायसवाल की लड़कियां चांदनी जायसवाल (13) और पार्वती जायसवाल 11 मंगलवार की सुबह 8 बजे अपनी दादी के साथ गांव के चंडीपारा तालाब नहाने गई थी। दादी कपड़ा धोकर वापस घर आ गई। बच्चियां तालाब में ही नहा रही थी। बच्चे बहुत देर तक घर नहीं आने से दादी फिर से तालाब गई।वहां उसने देखा कि दोनों लड़कियों के कपड़े तालाब किनारे रखे है, लेकिन लड़कियां दिखाई नहीं दे रही है। अनहोनी की आशंका पर दादी ने घर के बाकी सदस्यों को सूचना दी और गांव वालो के सहयोग से तालाब में ही बच्चियों की खोजबीन शुरू करने लगे।

कोरबा में 9वीं की छात्रा ने लगाई फांसी 78% आए फिर भी थी निराश

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

कोरबा जिले में 9वीं की परीक्षा में 78% अंक मिलने के बावजूद एक छात्रा ने सुसाइड कर लिया। बालको नगर की रहने वाली जानवी राजपूत (14) मेधावी छात्रा थी और स्काउट गाइड की सक्रिय सदस्य थी। सोमवार को ही रिजल्ट आया जिसके बाद उसने अपने कमरे में फांसी लगा ली। मामला बालको थाना क्षेत्र का है। परिजनों ने बताया कि वह अपने प्रदर्शन से निराश जानवी ने घर पहुंचकर बताया कि उसने बहुत मेहनत की थी और उसे इससे बेहतर अंक की उम्मीद थी। जानवी के पिता शिव राजपूत भारत एल्युमिनियम कंपनी की एक कॉन्ट्रैक्ट एजेंसी में कार्यरत हैं। उन्होंने बेटी का हौसला बढ़ाने के लिए नए कपड़े खरीदे और मिठाई भी बांटी। लेकिन उसने निराश होकर ये कदम उठा लिया।सोमवार की रात खाना खाने के बाद सभी अपने-अपने कमरों में सोने चले गए। मंगलवार सुबह जब काफी देर तक जानवी का कमरा नहीं खुला, तो परिजनों ने दरवाजा तोड़कर देखा। अंदर जानवी फांसी के फंदे पर लटकी हुई थी। जिला अस्पताल चौकी प्रभारी दाऊद कुजुर के मुताबिक, परिजनों का बयान दर्ज कर लिया गया है और मामले की जांच बालको थाने को सौंपी जाएगी। घटना के बाद परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। जानवी की सहेलियां और दोस्त भी शोक में डूबे हैं।

एक गांधी गाय की पूजा करते थे,दूसरा बीफ खाता है

विजयवर्गीय बोले- राहुल हिंदी में ठीक से गांधी भी नहीं लिख पाते

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

मध्य प्रदेश के कैबिनेट मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने रायपुर एयरपोर्ट पर राहुल गांधी को लेकर कहा कि एक गांधी देश के गरीबों के लिए अपने कपड़े उतार कर जीते थे। बकरी का दूध पिया करते थे। यह गांधी तो थाईलैंड जाकर छुट्टी मनाते हैं। वो गांधी गाय की पूजा करते थे। यह गांधी तो बीफ खाता है। कैलाश विजयवर्गीय ने पीसीसी चीफ दीपक बैज के 'गांधी की आंधी है' वाले बयान पर जवाब दिया है।विजयवर्गीय ने कहा कि यह कौन से गांधी की बात कर रहे हैं। वह गांधी जो देश के लिए जिया करते थे या वह गांधी जो हिंदी में ठीक से गांधी भी नहीं लिख सकते। पर जल्दी गुस्सा हो जाती थी। उसे सिर्फ दोपहर में घूमने को लेकर टोका गया तो उसने अपना गला काट लिया। मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि, उन गांधी को तो हम भी मानते हैं, उनका पूरा सम्मान करते हैं। यह गांधी देश के लिए कहीं ना कहीं नकारात्मक है। जिस तरह से विदेशों में जाकर राहुल गांधी भारत के खिलाफ बयानबाजी करते हैं, यह दुर्भाग्यजनक है। आपातकाल में कांग्रेस ने क्या किया है। देश के लोगों के साथ यह हम सभी जानते हैं।कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि, वक्फ बोर्ड की सच्चाई अब पूरा देश समझ चुका है। वक्फ बोर्ड के नाम पर कुछ लोग जमीन की खरीद फरोख्त का काम किया करते थे। अब ये नहीं चलेगा। मुस्लिम लोग भी इस बात को समझ चुके हैं। पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद में हुई हिंसक घटनाओं पर कैलाश विजयवर्गीय ने ममता बनर्जी पर निशाना साधा। विजयवर्गीय ने कहा कि, ममता बनर्जी को हिंदुओं की तनिक भी चिंता नहीं है। ममता बनर्जी को बस चिंता है तो अपनी कुर्सी की। बता दें कि बीजेपी बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर की जयंती पर देशभर में 10 दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन कर रही है। राजनांदगांव में भी एक ऐसा ही कार्यक्रम है। राजनांदगांव के कार्यक्रम में शामिल होने के लिए कैलाश विजयवर्गीय छत्तीसगढ़ पहुंचे। रायपुर एयरपोर्ट पर उनका बीजेपी नेताओं और कार्यकर्ताओं ने स्वागत किया।

सुप्रिया बोलीं- प्रधानमंत्री मोदी डरे हुए हैं

कहा-गलत के खिलाफ बोलना हमारे DNA में

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

कांग्रेस की नेशनल स्पोकपर्सन सुप्रिया श्रीनेत ने नेशनल हेराल्ड मामले को लेकर कहा कि गलत के खिलाफ आवाज उठाना हमारे डीएनए में है। उन्होंने कहा कि जब देश में अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन चल रहा था तब वे मुखबिरी कर रहे थे, गलत के खिलाफ बोलना बीजेपी के डीएनए में नहीं है। श्रीनेत ने आगे कहा- प्रधानमंत्री मोदी डरे हुए हैं। नेशनल हेराल्ड मामले को लेकर कांग्रेस देशभर में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर रही है। सुप्रिया ने कहा कि ये प्रेस कॉन्फ्रेंस जरूरी है क्योंकि झूठ को बहुत ताकत से परोसा जा रहा है। 'हम महात्मा गांधी की पार्टी हैं, इसलिए सच को सामने लाना हमारी जिम्मेदारी है।'सुप्रिया श्रीनेत ने आरोप लगाया कि श्रेष्ठ इस वक्त भारत में चुनाव आयोग की तरह काम कर रही है, जिसे बच्चा-बच्चा जानता है। उन्होंने कहा कि बीजेपी केंद्र की एजेंसियों का दुरुपयोग कर रही है और विपक्ष को डराने की कोशिश कर रही है। उन्होंने बताया कि स्वतंत्रता संग्राम के समय नेशनल हेराल्ड और नवजीवन जैसे अखबार देश की आवाज बने थे। 'एसोसिएटेड जर्नल्स लिमिटेड' (पत्रिका) की स्थापना आजादी के नायकों ने की थी। बाद में पत्रिका आर्थिक संकट में आ गया और कर्ज

एयरफोर्स अफसर का दावा झूठा,सीसीटीवी में पहले हमला करते दिखा

बेंगलुरु (एजेंसी)। बेंगलुरु में वायुसेना अधिकारी और उनकी अफसर पत्नी से मारपीट के मामले में नया सीसीटीवी फुटेज सामने आया है। फुटेज से साफ है कि विंग कमांडर की ओर से भी मारपीट की गई थी। इसमें विंग कमांडर को पहले मारपीट की शुरुआत करते और युवक को सड़क पर धकेलते और लात मारते देखा जा सकता है। सीसीटीवी फुटेज के मुताबिक, डीआरडीओ कॉलोनी से एयरपोर्ट जा रहे विंग कमांडर शिलादित्य बोस और उनकी पत्नी स्क्वॉड्रन लीडर मधुमिता, एक नियॉन ग्रीन जैकेट पहने युवक के पास पहुंचे। इसके बाद झगड़ा बढ़ा और हाथापाई शुरू हो गई। वीडियो में मधुमिता भी युवक से बहस करती दिखीं। इससे पहले सोमवार को विंग कमांडर बोस ने एक वीडियो जारी किया था, इस वीडियो में उन्होंने दावा किया था कि मुझ पर और पत्नी पर सुबह कुछ लोगों ने हमला कर दिया था। मेरे साथ मारपीट के अलावा गाली-गलौज भी की गई।

वीडियो में अधिकारी खून से लथपथ दिख रहे थे। आरोपी की पहचान विकास कुमार के रूप में की गई, वह कॉल सेंटर में काम करता है। पुलिस ने उसे अरेस्ट कर लिया। वहीं, आरोपी की शिकायत पर विंग कमांडर पर अटेम्प्ट टू मर्डर और मारपीट का केस दर्ज किया गया है।

कर्नाटक पूर्व डीजीपी मर्डर मामला, बेटी-पत्नी गिरफ्तार

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक के पूर्व पुलिस महानिदेशक ओम प्रकाश की हत्या के मामले में पत्नी पल्लवी को पुलिस ने अरेस्ट कर लिया। इसके बाद उसे कोर्ट में पेश किया गया, जहां से 14 दिन की ज्यूडिशियल कस्टडी में भेज दिया गया। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक बेटी को भी अरेस्ट किया गया है। पुलिस सोर्स के मुताबिक घटना के समय ओम प्रकाश खाना खा रहे थे। इस दौरान दोनों के बीच झगड़ा हुआ। यह इतना बढ़ गया कि पत्नी ने उनकी हत्या कर दी। पल्लवी ने पहले ओम प्रकाश पर मिर्ची पाउडर फेंका, जब जलन से राहत पाने के पूर्व डीजीपी इधर-उधर भाग रहे थे तो पल्लवी ने उनकी गर्दन, पेट और छाती पर चाकू से 10-12 वार किए गए। इस वारदात के दौरान बेटी कृति भी वहीं मौजूद थी। जांच से जुड़े सोर्स के मुताबिक, हत्या के 5 दिन पहले से ही आरोपी पत्नी गूगल से मौत की साजिश कर रही थी। गूगल पर गले की नसें काटने से मौत कैसे होती है% जैसी चीजें सर्च कीं। डिवाइसेज और सर्च हिस्ट्री खंगालने के बाद यह खुलासा हुआ है। पुलिस के मुताबिक, हत्या प्री-प्लांड थी।

सुप्रीम कोर्ट निशिकांत दुबे के खिलाफ अगले हफ्ते सुनवाई करेगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को भाजपा सांसद निशिकांत दुबे के खिलाफ दायर याचिका पर सुनवाई को तैयार हो गया है। कोर्ट ने सुनवाई के लिए याचिका अगले सप्ताह लिस्ट करने को कहा है। हालांकि अभी तारीख तय नहीं की है। याचिका में सुप्रीम कोर्ट और चीफ जस्टिस के खिलाफ दिए भाजपा सांसद के बयानों के वीडियो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से हटाने की मांग की गई है।

मेडिकल टूरिज्म बढ़ाने में भागीदारी करें आयुष विभाग-मुख्यमंत्री

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मेडिकल टूरिज्म एक उभरता हुआ सेक्टर है। प्रदेश में मेडिकल टूरिज्म की असीम संभावनाएं हैं। स्वास्थ्य विभाग के साथ-साथ आयुष विभाग भी इस क्षेत्र में भागीदारी करें। प्रदेश के हर पर्यटन स्थल, धार्मिक एवं आध्यात्मिक महत्व के स्थलों के आसपास वैलनेस सेंटर स्थापित किए जाएं, इससे यहां आने वाले पर्यटक आयुष विभाग की प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति और पंचकर्म सुविधा का भी लाभ ले सकेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव मंत्रालय में आयुष विभाग की समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में उच्च शिक्षा, आयुष एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री श्री इंदर सिंह परमार, मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन, अपर मुख्य सचिव (मुख्यमंत्री कार्यालय) डॉ. राजेश राजौरा, प्रमुख सचिव वित्त श्री मनीष रस्तोगी, प्रमुख सचिव आयुष श्री डी.पी. आहूजा सहित अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राष्ट्रीय आयुष मिशन में प्रदेश में जहां-जहां नए आयुर्वेद महाविद्यालय स्थापित किए जाने हैं, इन्हें प्रारंभ करने के लिए तेज एवं प्रभावी कार्रवाई की जाएं। स्वास्थ्य एवं आयुष विभाग आपसी समन्वय और तालमेल से काम करें और अधिक से अधिक मरीजों को अपनी-अपनी चिकित्सा पद्धतियों से उपचार का लाभ दें। उन्होंने कहा कि दोनों ही विभाग रोजगारपरक शिक्षा की ओर बढ़ें, ताकि प्रदेश को अधिकाधिक डॉक्टर्स एवं आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी मिलें।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आयुष विभाग द्वारा 543 से अधिक आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी, 36 होम्योपैथी चिकित्सा अधिकारी, 14 यूनानी चिकित्सा अधिकारी, 65 आयुर्वेद व्याख्याता एवं 150 से अधिक पैरामेडिकल स्टॉफ एवं संविदा डाटा एंट्री ऑपरेटर की पोस्टिंग भी कर देने की जानकारी मिलने पर विभागीय अधिकारियों की सराहना की। उन्होंने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि अब आयुष के डॉक्टर्स गांव-गांव में उपलब्ध हो रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बिना किसी डिग्री के क्लीनिक चलाकर एवं घर-घर जाकर भोले-भाले ग्रामीण मरीजों की जान के साथ खिलवाड़ करने वाले झोलाछाप डॉक्टर (क्वेक्स) पर सख्ती से अंकुश लगाने के निर्देश दिए।

वक्फ कानून के खिलाफ मुस्लिम संगठनों का प्रदर्शन

नई दिल्ली (एजेंसी)। नए वक्फ कानून के विरोध में ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड आज मंगलवार को दिल्ली में प्रदर्शन कर रहा है। वक्फ बचाव अभियान के तहत तालकटोरा स्टेडियम में तहफ्फुज-ए-औकाफ कारवां (वक्फ की हिफाजत) नाम से आयोजन हुआ है। कार्यक्रम में जमात-ए-इस्लामी हिंद समेत देशभर के मुस्लिम संगठनों के अध्यक्ष और प्रतिनिधि पहुंचे हैं। आईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी भी शामिल हुए हैं। बैठक में वक्फ कानून के खिलाफ आगे की कानून लड़ाई लड़ने को लेकर चर्चा हो रही है।

नेशनल हेराल्ड की लूट वाला बैग लिए दिखीं बांसुरी स्वराज

नई दिल्ली (एजेंसी)। वन नेशन-वन इलेक्शन पर जॉइंट पार्लियामेंट्री कमेटी की बैठक मंगलवार को शुरू हुई। मीटिंग में भाजपा सांसद बांसुरी स्वराज %नेशनल हेराल्ड की लूट लिखा बैग लेकर पहुंचीं। स्वराज ने कांग्रेस पार्टी पर गलत काम करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा- पहली बार है जब लोकतंत्र के चौथे स्तंभ-मीडिया में भ्रष्टाचार हुआ है। दरअसल, 15 अप्रैल को प्रवर्तन निदेशालय ने कांग्रेस नेता सोनिया गांधी, राहुल गांधी और सैम पित्रोदा के खिलाफ नेशनल हेराल्ड मनी लॉन्ड्रिंग मामले में चार्जशीट दाखिल की थी। 25 अप्रैल को सुनवाई है। इससे पहले 10 दिसंबर को प्रियंका गांधी संसद में पीएम मोदी और अडाणी के कार्टून बने बैग लेकर पहुंची थीं। वे गौतम अडाणी पर अमेरिका कोर्ट में लगाए गए अभियोग के मुद्दे पर प्रदर्शन में शामिल हुई थीं।

बैग के जरिए विरोध करने को लेकर प्रियंका गांधी भी पीछे नही हैं। वह कई बार अलग-अलग बैग के साथ नजर आ चुकी हैं। 16 दिसंबर, 2024 को प्रियंका गांधी फिलिस्तीन आजाद होगा लिखा बैग लेकर संसद पहुंची थीं। हैंड बैग पर शांति का प्रतीक सफेद कबूतर और तरबूज भी बना था।

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमला, टूरिस्ट की मौत, नाम पूछकर गोली मारी

पहलगाम (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में मंगलवार दोपहर आतंकियों ने पर्यटकों पर फायरिंग कर दी। हमले में एक टूरिस्ट की मौत हो गई। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक आतंकियों ने टूरिस्ट से नाम पूछा, इसके बाद उसके सिर में गोली मार दी और फायरिंग करते हुए भाग निकले। हमले की जिम्मेदारी लश्कर-ए-तैयबा ने ली है। अधिकारियों के मुताबिक घटना बैसरन घाटी में हुई, इसमें 8 लोग घायल भी हुए हैं। इनमें कुछ स्थानीय भी हैं। हालांकि घायलों की संख्या 20 है। एक अफसर ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि मरने वालों की संख्या 20 से ज्यादा हो सकती है। यह फरवरी 2019 के बाद से कश्मीर में सबसे बड़ा आतंकी हमला हो सकता है। तब पुलवामा में आत्मघाती हमले में सीआरपीएफ के 47 जवान मारे गए थे। घटना को लेकर पीएम नरेंद्र मोदी ने सऊदी अरब से गृह मंत्री अमित शाह से फोन पर बात की है। उन्होंने शाह से मौके पर जाने को कहा है। पीएम से बातचीत के बाद शाह श्रीनगर के लिए रवाना हो गए हैं। यहां अफसरों के साथ हाईलेवल बैठक करेंगे। इधर, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सेना प्रमुख उपेंद्र द्विवेदी से बातचीत करके हालातों की जानकारी ली।

अमेरिकी उपराष्ट्रपति बोले-भारत में मेरी पत्नी मुझसे बड़ी सेलिब्रिटी

जयपुर (एजेंसी)। अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस भारत दौरे पर हैं। मंगलवार को जयपुर में एक बिजनेस समिट को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि भारत में मेरी पत्नी मुझसे बड़ी सेलिब्रिटी है। मैं कई देशों में गया हूं, पहली बार भारत आया हूं। अन्य देशों में नीरसता लगती है, लेकिन भारत में जीवंतता महसूस होती है। वेंस ने कहा कि मोदी एक टफ नेगोशिएटर हैं और भारत की इंडस्ट्री के लिए लड़ते हैं। यह मैंने कई बार देखा है।

इससे पहले वेंस ने मंगलवार सुबह पत्नी उषा, बेटों विवेक, इवान और बेटी मीराबेल के साथ जयपुर का आमेर किला देखा। वे बेटी को गोद में लेकर घूमते हुए दिखे। वे जयपुर शहर से करीब 10 किमी दूर अरावली की पहाड़ियों पर स्थित आमेर किले में जीप से पहुंचे। आमेर फोर्ट के जलेब चौक पर दो हाथियों (चंदा और पुष्पा) ने मेहमानों का स्वागत किया। लोक कलाकारों ने भी कच्छी घोड़ी, घूमर और कालबेलिया डांस कर उनका वेलकम किया। इसके बाद मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और उप मुख्यमंत्री दीया कुमारी ने वेंस के परिवार से मुलाकात की।

धनखड़ बोले- संसद ही सुप्रीम, उससे ऊपर कुछ नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट के अधिकार क्षेत्र को लेकर चल रही बहस के बीच उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने मंगलवार को कहा कि संसद ही सबसे ऊपर है। धनखड़ दिल्ली यूनिवर्सिटी में संविधान पर आयोजित प्रोग्राम में स्पीच दे रहे थे। धनखड़ ने कहा, संसद सर्वोच्च है और उसके ऊपर कोई नहीं हो सकता। सांसद ही असली मालिक हैं, वही तय करते हैं कि संविधान कैसा होगा। उनके ऊपर कोई और सत्ता नहीं हो सकती। इससे पहले 17 अप्रैल को धनखड़ ने कहा था कि सुप्रीम कोर्ट का काम ऐसा है, जैसे वो सुप्रीम संसद हो। धनखड़ का यह

बयान तब आया है, जब सुप्रीम कोर्ट में भाजपा सांसद निशिकांत दुबे के बयान का मामला पहुंचा है। दुबे ने कहा था कि मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति राष्ट्रपति करते हैं। ऐसे में सीजेआई किसी राष्ट्रपति को निर्देश कैसे दे सकते हैं।

महाराष्ट्र में हिंदी अनिवार्य भाषा नहीं होगी

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में स्कूली पढ़ाई के लिए अब हिंदी अनिवार्य भाषा नहीं होगी। राज्य सरकार ने हिंदी को तीसरी अनिवार्य भाषा बनाने का निर्णय वापस ले लिया है। शिक्षा मंत्री दादाजी भुसे ने कहा कि मराठी अनिवार्य होगी, अंग्रेजी दूसरी भाषा और तीसरी भाषा ऑप्शनल यानी वैकल्पिक होगी।

इससे पहले रविवार को पत्रकारों से बातचीत के दौरान महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडनवीस ने कहा था कि स्टूडेंट्स तीसरी भाषा अपने मन से चुन सकेंगे। हिंदी अनिवार्य नहीं होगी।

आपको बता दें फैसला वापस लेने से 6 दिन पहले यानी बुधवार को ही महाराष्ट्र में 1 से 5वीं तक के स्टूडेंट्स के लिए तीसरी भाषा के तौर पर हिंदी अनिवार्य की

गई थी। ये फैसला राज्य के सभी मराठी और अंग्रेजी मीडियम स्कूलों पर लागू किया गया था।

नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020 के नए करिकुलम को ध्यान में रखते हुए महाराष्ट्र में इन क्लासेज के लिए तीन भाषा की पॉलिसी लागू की गई थी। राज्य के स्कूल एजुकेशन डिपार्टमेंट ने बुधवार को ये घोषणा की थी।

बोलेरो पलटी, 5 बहनों समेत 8 की मौत

दमोह (एजेंसी)। दमोह के बनवार चौकी क्षेत्र में महादेव घाट के पास बोलेरो अनियंत्रित होकर खाई में गिर गई। मंगलवार सुबह करीब 11 बजे हुए हादसे में एक ही परिवार के 8 लोगों की मौत हो गई। इनमें 5 बहनें शामिल हैं। 8 और 10 साल के दो बच्चों की भी जान गई है।

पुलिस ने बताया कि जबलपुर जिले का परिवार बांदकपुर से जागेश्वर धाम के दर्शन करने के बाद लौट रहा था। बोलेरो में 15 लोग सवार थे। इनमें से 6 की मौके पर ही मौत हो गई जबकि दो बच्चों ने दमोह जिला अस्पताल में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया।

5 अन्य घायलों को दमोह जिला अस्पताल में प्राथमिक उपचार के बाद जबलपुर मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया है। उन्हें ग्रीन कॉरिडोर बनाकर दमोह से जबलपुर पहुंचाया गया।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने हादसे पर दुख जताते हुए मृतकों के परिजन को 2-2 लाख जबकि घायलों को 50-50 हजार रुपए की आर्थिक सहायता देने की घोषणा की है।

जम्मू-कश्मीर के रामबन में सीएम उमर की गाड़ी रोकी

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के रामबन में स्थानीय लोगों ने मंगलवार को मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला की गाड़ी रोक ली। महिलाएं गाड़ी के सामने आ गईं और हाथ जोड़कर रोने लगीं। लोगों ने कहा कि लैंड स्लाइड और बाढ़ के बाद हमारी जिंदगी बदहाल हो गई है।

लोग कहने लगे की मुख्यमंत्री जी आप 2 मिनट बात कीजिए। उमर ने अपनी गाड़ी की खिड़की खोली

और लोगों की परेशानियां सुनीं। राम बन में 2 दिन पहले बादल फटने से 3 लोगों की मौत हो गई। पुलिस ने करीब 100 लोगों को रेस्क्यू किया। बादल फटने का मतलब है बहुत कम समय में बहुत ज्यादा बारिश का हो जाना। बादल फटने से अचानक बाढ़ आ गई और पहाड़ का मलबा गांव में फैल गया। रामबन के बनिहाल इलाके में कई जगह लैंडस्लाइड हुई थी।

गुजरात में ट्रेनिंग प्लेन क्रैश, एक पायलट की मौत

अमरेली (एजेंसी)। गुजरात में अमरेली के गिरिया रोड स्थित रिहायशी इलाके में एक पायलट ट्रेनिंग सेंटर का प्लेन दुर्घटनाग्रस्त हो गया। हादसे में पायलट की मौत हो गई है। विमान के गिरने के बाद जोरदार धमाका हुआ, जिससे पूरे इलाके में दहशत फैल गई। सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड की टीम और पुलिस मौके पर पहुंची और बचाव कार्य शुरू किया। प्लेन में एक ही पायलट सवार था अमरेली पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक, हादसे का शिकार हुआ यह प्लेन एक निजी कंपनी द्वारा संचालित था। हादसे का शिकार हुए प्लेन में एक ही पायलट सवार था, जिसकी मौत हो गई। पायलट का नाम अनिकेत महाजन है। हादसे से पहले पायलट ने चार बार उड़ान भरी थी डीवाईएपी चिराग देसाई ने बताया कि अमरेली स्थित ट्रेनिंग सेंटर अपने एकल इंजन वाले विमानों के जरिए ट्रेनिंग देता है। आज इस प्लेन को अनिकेत महाजन उड़ा रहे थे।

पश्चिम बंगाल में शिक्षक अनिश्चितकालीन धरने पर बैठे

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल शिक्षक भर्ती घोटाले मामले में योग्य शिक्षकों की सूची जारी नही करने को लेकर डब्ल्यूबीएसएससी के मुख्यालय के बाहर सोमवार रात से हजारों शिक्षक अनिश्चितकालीन धरने पर बैठ गए है। दरअसल, राज्य के शिक्षा मंत्री ब्रत्य बसु ने 21 अप्रैल को शाम 6 बजे तक दोषी औप निर्दोष उम्मीदवारों की सूची जारी करने का वादा किया था। तेज धूप में प्रदर्शन करते हुए, लगभग 2,000 से अधिक प्रदर्शनकारियों ने डब्ल्यूबीएसएससी मुख्यालय को घेर लिया है। जिससे अधिकारियों का अंदर-बाहर आना-जाना बंद हो गया है। आयोग के अध्यक्ष सिद्धार्थ मजूमदार सोमवार शाम से ही अंदर फंसे हुए हैं। प्रदर्शन कर

रहे शिक्षक मांग कर रहे हैं कि आयोग उन उम्मीदवारों की सूची सार्वजनिक करे जिन्हें मेरिट के आधार पर नियुक्त किया गया था। वहीं, मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने मंगलवार को मिदनापुर में एक कार्यक्रम में शिक्षकों से काम पर लौटने और स्कूलों में पढ़ाना शुरू करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा- आपको यह सोचने की जरूरत नहीं कि कौन दोषी है और कौन नहीं। आपको सिर्फ यह सोचना है कि आपकी नौकरी और वेतन सुरक्षित है। हम भरोसा दिलाते हैं कि आपकी तनख्वाह मिलेगी। सुप्रीम कोर्ट ने 3 अप्रैल को घोटाले से जुड़े कोलकाता हाईकोर्ट के फैसले को बरकरार रखा था। हाईकोर्ट ने 2016 की शिक्षक और स्टाफ भर्ती को अवैध बताते हुए रद्द कर दिया था। मुख्यमंत्री ने मई के पहले सप्ताह में मुर्शिदाबाद के प्रभावित इलाकों का दौरा करने की भी बात कही। यहां 11-12 अप्रैल को वक्फ बिल को लेकर हिंसा भड़क गई थी।

राहुल के बयान पर चुनाव आयोग का जवाबकहा- गलत सूचना फैलाना कानून का अपमान, अपने पार्टी प्रतिनिधियों को भी बदनाम करता है

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका दौरे पर 20 अप्रैल को राहुल गांधी ने महाराष्ट्र चुनाव पर सवाल उठाए थे। इस पर चुनाव आयोग ने मंगलवार को बयान जारी किया। आयोग ने कहा- भारत में जिस पैमाने और सटीकता से चुनाव होते हैं, उसकी दुनिया भर में तारीफ होती है। पूरा देश जानता है कि वोटर लिस्ट तैयार करने, वोटिंग और काउंटिंग समेत हर चुनाव प्रक्रिया में सरकारी कर्मचारी शामिल होते हैं। आयोग को बदनाम करने की कोशिश करना पूरी तरह से बेतुकी है। चुनाव आयोग ने कहा- किसी के द्वारा फैलाई जा रही कोई भी गलत सूचना न केवल कानून का अपमान है, बल्कि खुद अपनी पार्टी के हजारों नियुक्त प्रतिनिधियों को भी बदनाम करता है। यह लाखों चुनाव कर्मचारियों के मेहनत को कम करता है, जो चुनाव में अथक और पारदर्शी तरीके से काम करते हैं। कांग्रेस सांसद और लोकसभा में नेता विपक्ष राहुल गांधी ने अमेरिका दौरे पर कहा था कि यह पूरी तरह साफ है कि भारत का चुनाव आयोग समझौता कर चुका है। सिस्टम में गड़बड़ी है। आयोग बोला- 2 घंटे में 65 लाख वोटिंग औसत से कम राहुल गांधी ने

अमेरिका के बॉस्टन में कहा था कि महाराष्ट्र में 5:30 से शाम 7:30 के बीच 65 लाख वोटिंग हुई। एक वोट डालने में करीब 3 मिनट लगते हैं। 2 घंटे में 65 लाख वोटिंग नामुमकिन है। अगर आप गणित लगाएंगे तो पता चलेगा कि रात 2 बजे तक वोटर्स की लाइन लगनी चाहिए, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।इस पर चुनाव आयोग ने कहा- महाराष्ट्र चुनाव में सुबह 7 बजे से शाम 6 बजे तक मतदान केंद्र पर पहुंचे 6 करोड़ 40 लाख 87 हजार 588 वोटरों ने वोट किया। हर घंटे करीब 58 लाख वोट डाले गए। इनके हिसाब से हर दो घंटे में करीब 116 लाख मतदाताओं ने वोट किया होगा। इस लिहाज से दो घंटे में 65 लाख वोट पड़ना औसत से बहुत कम है।

राहुल ने आरोप लगाया था कि महाराष्ट्र में जितने बालिग (18 साल से ज्यादा, वोट डालने के योग्य) हैं, उससे ज्यादा वोट पड़े हैं। इस पर चुनाव आयोग ने कहा- कानून के अनुसार वोटर लिस्ट चुनाव से ठीक पहले या साल में एक बार संशोधित होती है। वोटर लिस्ट की फाइनल कॉपी कांग्रेस समेत सभी पार्टियों को दी जाती है।

राहुल ने पहले भी वोटर्स लिस्ट में गड़बड़ी का आरोप लगाया था कांग्रेस सांसद राहुल गांधी पहले भी महाराष्ट्र चुनाव में फर्जी तरीके से वोटर्स जोड़े जाने का आरोप लगाया था। इस साल फरवरी में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान राहुल गांधी ने कहा कि महाराष्ट्र चुनाव में गड़बड़ी हुई।

शुभम गिल कर रहे हैं शादी?

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 के 39वें मैच में कोलकाता नाइट राइडर्स के कप्तान अजिंक्य रहाणे ने टॉस जीतकर पहले गेदंबाजी करने का फैसला किया। वहीं टॉस के बाद उन्होंने बताया कि उनकी प्लेइंग इलेवन में कोई बदलाव नहीं है। रहमानुल्लाह गुरबाज और मोइन अली की केकेआर की प्लेइंग इलेवन में एंट्री हुई है। हालांकि, जीटी के कप्तान शुभमन गिल से सवाल की बारी आई तो बड़ा ही मजेदार वाक्या हुआ। डैनी मॉरिसन ने शुभमन गिल से ये नहीं पूछा कि गुजरात टाइटंस की प्लेइंग इलेवन में कोई बदलाव हैं या नहीं। उन्होंने इसके बदले ये सवाल किया कि क्या वह शादी करने जा रहे हैं? इस सवाल पर शुभमन गिल ने अपने जवाब से उन्हें लाजवाब कर दिया। अजिंक्य राहणे के बाद डैनी मॉरिसन ने शुभमन गिल से पूछा, आप अच्छे दिख रहे हैं, शादी की घंटियां बजने वाली हैं? क्या जल्दी ही शादी करने वाले हैं? इस पर गिल मुस्कुराने लगे और कहा कि, नहीं ऐसा कुछ नहीं है। फिलहाल, गिल की अगुवाई गुजरात की टीम ने आईपीएल 2025 में अब तक अच्छा प्रदर्शन किया है। जीटी 7 मैचों से पांच जीतकर अंक तालिका में टॉप पर काबिज है। उसके खाते में 10 अंक हैं। जीटी ने अपने पिछले मैच में दिल्ली कैपिटल्स को मात दी। दूसरी ओर, रहाणे की कप्तानी वाली केकेआर ने 7 मुकाबलों से केवल तीन जीते हैं। डिफेंडिंग चैंपियन केकेआर तालिका में सातवें पायदान पर है।

रोहित लय में रहें तो विरोधी होते हैं बेबस-पांड्या

मुम्बइ (एजेंसी)। मुंबई इंडियंस के कप्तान हार्दिक पांड्या ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसएके) के खिलाफ जीत के बाद रोहित शुर्मा की जमकर प्रशंसा की है। हार्दिक ने कहा कि रोहित जब लय में आ जाते हैं तो उनके सामने कोई टिक नहीं पाता। इसलिए उनके फार्म को लेकर चिन्ता की जरुरत नहीं है। इस आईपीएल सत्र में रोहित ने अपना पहला अर्धशतक लगाया है। उन्होंने नाबाद 76 रन बनाये हैं। इससे पहले के मैचों में वह रन नहीं बना पाये जिससे उनके फार्म पर सवाल उठे थे। पांड्या ने कहा कि उनका लक्ष्य आराम से खेलने के साथ ही अपनी रणनीति पर अमल करना रहा है। मुंबई इंडियंस ने रोहित और सूर्यकुमार यादव नाबाद 68 रनों की सहायता से लगातार तीसरी जीत हासिल की। दोने ने दूसरे विकेट के लिए 114 रन बनाये।

पांड्या ने कहा, ' हमने जिस तरह से बड़ा लक्ष्य हासिल उससे टीम का मनोबल बढ़ा है। रोहित जब टिक जाते तो विरोधी गेम से बाहर हो जाते हैं क्योंकि वह एक मैच विजेता खिलाड़ी है। मैच में हर खिलाड़ी अपना योगदान दे रहा है। हम केवल सरल क्रिकेट और अपनी रणनीति को अमल में लाने का प्रयास कर रहे हैं। '

वहीं सीएसके की कप्तानी कर रहे महेंद्र सिंह धोनी ने कहा, 'हम अच्छा स्कोर नहीं बना पाये जबकि हमें पता था कि बाद में ओस पड़ेगी। हमें शुरुआत में ही आक्रामक क्रिकेट खेलना चाहिये था क्योंकि बाद के ओवरों में बुमराह गेंदबाजी करते हैं।' उन्होंने कहा, '175 का स्कोर काफी कम था और पहले छह ओवर में ज़्यादा रन देने के बाद वापसी करना कठिन होता है। हमें यह सोचना है कि हम कहां गलती कर रहे हैं जबकि आगे बढ़ने हमें हर मैच जीतना है पर हम हर मैच को एक मैच के तौर पर लेंगे।'

शुभमन गिल का फिर टूटा सपना, विराट कोहली के अनचाहे रिकॉर्ड को छुआ

नई दिल्ली (एजेंसी)। गुजरात टाइटंस के कप्तान शुभमन गिल अपनी पुरानी टीम कोलकाता नाइट राइडर्स के खिलाफ लौटे और बेहतरीन पारी खेलकर छा गए। गिल ने सोमवार को केकेआर के खिलाफ 90 रन की बेहतरीन पारी खेली। लेकिन वह महज 10 रन से अपने शतक से चूक गए जो कि दिल तोड़ने वाला था। गिल ने 55 गेंदों पर 10 चौके और तीन छक्कों की मदद से 90 रन बनाए। गिल आसानी से शतक की ओर बढ़ रहे थे लेकिन वैभव अरोड़ा ने उनका सपना तोड़ दिया। 18वें ओवर की पांचवीं गेंद पर रमनदीप सिंह ने उनका कैच लपका। गिल अगर इस मैच में शतक बना लेते तो ये उनका इस सीजन का पहला और आईपीएल करियर का पांचवां शतक होता। गिल ने पिछले साल 10 मई को आईपीएल में आखिरी शतक लगया था। 335 दिन बाद गिल के पास मौका आया लेकिन वह एक बार फिर चूक गए। रमनदीप सिंह ने उनका शानदार कैच लेकर गिल की पारी का अंत कर दिया।

गिल ने इस मैच में सुदर्शन के साथ मिलकर पहले विकेट के लिए शतकीय साझेदारी की। इन दोनों ने पहले विकेट के लिए 114 रन जोड़े। सुदर्शन भी अर्धशतक लगाने में सफल रहे। उनहोंने 36 गेंदों में 6 चौके और एक छक्के की मदद से 52 रन बनाए। हालांकि, गिल ने विराट कोहली के अनचाहे रिकॉर्ड की बराबरी भी कर ली। ये दूसरी बार है जब गिल आईपीएल में नाइनटीस में आउट हुए। वह ऐसा करने वाले भारत के चौथे बल्लेबाज हैं।

सीएसके के डेव्हन कॉनवे पर टूटा दुखों का पहाड़, पिता का हुआ निधन

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग 2025 का 38वां मैच मुंबई इंडियंस और चेन्नई सुपर किंग्स के बीच खेला गया। इस मैच में मुंबई इंडियंस ने चेन्नई सुपर किंग्स को नौ विकेट से मात दे दी है। महेंद्र सिंह धोनी की अगुवाई वाली चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाड़ी इस मैच में हाथ पर काली पट्टी बांध कर उतरे थे। आमतौर पर किसी विरोध के लिए या किसी को श्रद्धांजलि देने के लिए खिलाड़ी हाथ पर काली पट्टी बांधकर मैच में खेलने उतरते है।

इस बार टीम के खिलाड़ी सीएसके टीम के प्लेयर डेव्हन कॉनवे के पिता ने निधन पर शोक व्यक्त करने के लिए काली पट्टी बांधकर खेलने उतरे थे। बता दें कि मैच के बाद प्रेजेंटेशन सेरेमनी में शुरूआत से पहले हर्षा भोगले ने सांत्वना देने के लिए न्यूजीलैंड के खिलाड़ी कॉन्वे का नाम लिया। मुंबई इंडियंस के खिलाफ खेले गए इस मैच में कॉन्वे ने नहीं खेला था और वो अपने घर लौट रहे है। वहीं चेन्नई सुपर किंग्स ने सोशल मीडिया पर भी इसकी जानकारी दी है और कॉनवे के पिता के निधन की जानकारी देते हुए उन्हें श्रद्धांजलि भी दी है। कॉनवे के पिता का निधन हो गया है। इस कठिन समय में हम उनके और उनके परिवार के साथ खड़े है। चेन्नई सुपर किंग्स आईपीएल सीजन 18 की शुरुआत में पहला मैच मुंबई इंडियंस के खिलाफ जीता था। इस मैच के बाद टीम को लगातार पांच मैचों में हार का सामना करना पड़ा है। चार मैचों में हारने के बाद टीम के कप्तान ऋतुराज गायकवाड़ चोट के कारण टूर्नामेंट से ही बाहर हो गए थे। इसके बाद टीम की कमान एमएस धोनी को दी गई थी। धोनी की कप्तानी में भी टीम नहीं संभल पाई और हार का सिलसिला जारी रहा। वहीं आईपीएल में डेव्हन कॉनवे कुल तीन मैच खेल चुके है, जिसमें उनके बल्ले से कुल 94 रन निकले। पंजाब के खिलाफ उन्होंने 69 रनों की अहम पारी खेली थी मगर इस मैच में भी चेन्नई 18 रनों से हारी थी। एमएस धोनी की कप्तानी वाली चेन्नई के लिए प्लेऑफ का रास्ता कठिन हो गया है। टीम अब टूर्नामेंट से बाहर होने की कगार पर है। चेन्नई आठ में से छह मैच हार चुकी है। अंक तालिका में चेन्नई सबसे नीचे के स्थान पर है। उसका नेट रन रेट (-1.392) भी सबसे खराब है।

पंचकूला नहीं इस शहर में होगा नीरच चोपड़ा क्लासिक इवेंट

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के स्टार एथलीट नीरज चोपड़ा के नाम वाला जैवलिन थ्रो इवेंट ह्ष्ट ष्ट्यड्डह्यह्यद्बष् पहले पंचकूला में होना था लेकिन अब नीरज ने खुद बताया कि इसे बेंगलुरु ट्रांसफर कर दिया गया है। अब जैवलिन थ्रो ये इवेंट पंचकूला की जगह बेंगलुरु के श्री कांतीरवा आउटडोर स्टेडियम में होगा। वर्ल्ड एथलेटिक्स के कैलेंडर में इस बदलाव की पुष्टि कर दी है। एक बड़ा सवाल ये है कि भारत में होने वाले इस जैवलिन थ्रो इवेंट में शामिल होने के लिए पेरिस ओलंपिक गोल्ड मेडलिस्ट पाकिस्तानी एथलीट अरशद नदीम भारत आएंगे या नहीं। इसको लेकर नीरज चोपड़ा ने अपनी प्रेस कॉन्फ्रेंस में जवाब दिया है।

बता दें कि, एनसी क्लासिक इवेंट को लेकर नीरज चोपड़ा ने बताया कि इस जैवलिन थ्रो इवेंटमें दो बार के विश्व चैंपियन और पेरिस ओलंपिक के कांस्य पदक विजेता ग्रेनेडा के एंडरसन पीटर्स भी शामिल होंगे। इसके अलावा जर्मनी के पूर्व ओलंपिक चैंपियन थॉमस रोहलर, केन्या के पूर्व विश्व चैंपियन जूलियस येगो और अमेरिका के कर्टिस थॉम्पसन, भी शामिल होंगे। थॉम्पसन वर्तमान में 87.76 मीटर थ्रो के साथ 2025 की सूची में सबसे ऊपर हैं।

वहीं अरशद नदीम के भारत आने की संभावनाओं को लेकर नीरज ने कहा कि उन्हे भी अधिकांश शीर्ष एथलीटों की तरह निमंत्रण भेजा गया है। नीरज ने कहा कि नदीम अपने कोच के साथ चर्चा करेंगे और अभी तक उनकी भागीदारी की कोई पुष्टि नहीं हुई है, लेकिन जल्द ही आधिकारिक घोषणा कर दी जाएगी।

वियतनाम पिकलबॉल ओपन कप में भारतीय एथलीटों का बेहतरी प्रदर्शन

नई दिल्ली (एजेंसी)। अखिल भारतीय पिकलबॉल संघ ने बताया कि हो ची मिन्ह सिटी में खेले जा रहे विजयनाम पिकलबॉल ओपन कप में भारतीय एथलीटों ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए दो गोल्ड, तीन सिल्वर और दो ब्रॉन्ज मेडल जीते। भारतीय टीम ने गुरुवार को ओपन कैटेगरी में अपने सभी पदक जीते। ये आयोजन रविवार को जारी रहेगा, जिसमें इंटरमीडिएट और शुरुआती स्तर की प्रतियोगिताएं होंगी। शीर्ष स्तरीय अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभाओं के साथ प्रतिस्पर्धा करते हुए भारतीय खिलाड़ियों ने असाधारण कौशल और खेल भावना का प्रदर्शन किया,

जिससे वैश्विक पिकलबॉल सर्किट में भारत का बढ़ता प्रभुत्व सुनिश्चित हुआ और इसकी पुष्टि हुई। टूर्नामेंट में भारत की टॉप पिकलबॉल प्रतिभाओं ने बेहतरीन प्रदर्शन किया। वृषाली ठाकुरे ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए त्याक करीना के साथ ओपन महिला डबल्स में गोल्ड मेडल जीता और वंशिक कपाड़िया के साथ ओपन मिक्स्ड डबल्स प्रो श्रेणी में सिल्वर और कांस्य मेडल जीता।

इन दो दिग्गज कमेंटेटर्स पर लगेगा बैन!

नई दिल्ली (एजेंसी)। बंगाल क्रिकेट संघ ने बीसीसीआई से ईडन गार्डन्स स्टेडियम में होने वाले आईपीएल मैचों के दौरान हर्षा भोगले और साइमन डुल के कमेंट्री करने पर रोक लगाने की अपील की है। बता दें कि, डुल और भोगले ने कहा था कि अगर ईडन गार्डन्स के क्यूरेटर सुजन मुखर्जी होम टीम केकेआर की जरूरतों के हिसाब से विकेट तैयार करने में मदद नहीं कर रहे हैं तो केकेआर को अपना होम ग्राउंड बदल लेना चाहिए। सूत्रों के मुताबिक कैब ने पत्र में इस पर कड़ी आपत्ति जताते हुए कहा है कि सुजन मुखर्जी ने कुछ भी गलत नहीं किया है। उन्होंने बीसीसीआई के नियमों का पालन किया है। विकेट तैयार करने को लेकर जो दिशानिर्देश हैं, उनका अनुसरण किया है। डुल ने कहा था कि फ्रेंचाइजी अपने होम स्टेडियम की फीस भुगतान करते हैं।

अगर वहां के क्यूरेटर उसकी जरूरत के मुताबिक विकेट तैयार नहीं करते हैं तो केकेआर को अपना होम ग्राउंड बदले लेना चाहिए। वहीं भोगले ने कहा था कि केकेआर अगर होम ग्राउंड में खेल रही है तो उसे अपने गेंदबाजों के अनुकूल विकेट के लिए क्यूरेटर से पूरा सहयोग मिलना चाहिए।

केकेआर का सामना आज अपने घर ईडन गार्डन्स स्टेडियम में गुजरात टाइटंस से है। इस मैच में केकेआर ने टॉस जीता और पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया है। केकेआर को अपने पिछले मैच में हार झेलनी पड़ी थी। पंजाब किंग्स के खिलाफ ये टीम 112 रन भी नहीं बना पाई थी।

संजू सैमनसन हुए बाहर, बेंगलुरु नहीं जयपुर में ही रहेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। सैमसन फिलहाल रिकवरी की प्रक्रिया से गुजर रहे हैं और टीम के होम बेस जयपुर में चुनिंदा आरआर मेडिकल स्टाफ के साथ रहेंगे। चल रही रिहैब प्रक्रिया के तहत वह आरसीबी के खिलाफ आगामी मैच के लिए बेंगलुरु नहीं जाएंगे। टीम प्रबंधन उनकी रिकवरी पर बारीकी से नजर रख रहा है और उनकी वापसी पर गेम बाय गेम अप्रोच अपनाएगा।

आईपीएल 2025 में राजस्थान रॉयल्स का प्रदर्शन कुछ खास नहीं है। टीम लगातार आखिरी मोड तक आते आते मैच गंवा बैठती है। वहीं 24 अप्रैल को होने वाले आरसीबी के खिलाफ मैच से पहले रॉयल्स टीम को बड़ा झटका लगा है। दरअसल, संजू सैमस चोटिल होने के कारण बाहर हो गए हैं। सैमसन को दिल्ली कैपिटल्स से सुपर ओवर में मिली हार के दौरान साइड इंजरी हो गई थी। जिसके कारण उन्हें बल्लेबाजी छोड़कर रिटायर हर्ट होना पड़ा था।

वहीं रॉयल्स ने बयान में कहा कि, सैमसन फिलहाल रिकवरी की प्रक्रिया से गुजर रहे हैं और टीम के होम बेस जयपुर में चुनिंदा आरआर मेडिकल स्टाफ के साथ रहेंगे। चल रही रिहैब प्रक्रिया के तहत वह आरसीबी के खिलाफ आगामी मैच के लिए बेंगलुरु नहीं जाएंगे। टीम प्रबंधन उनकी रिकवरी पर बारीकी से नजर रख रहा है और उनकी वापसी पर गेम बाय गेम अप्रोच अपनाएगा।

सैमसन की अनुपस्थिति में राजस्थान रॉयल्स की कप्तानी रियान पराग करेंगे। टूर्नामेंट के दौरान इससे पहले भी पराग ने कप्तान की भूमिका निभाई थी। जब सैमसन उंगली की चोट से उबर रहे थे और इम्पैक्ट प्लेयर के तौर पर खेल रहे थे। कप्तान के तौर पर पराग ने चार मैचों में 147.88 की स्ट्राइक रेट से 105 रन बनाए हैं।

सैमसन ने टूर्नामेंट की शुरुआत हैदराबाद में सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ 37 गेंदों पर 66 रन बनाकर की थी और लगातार अच्छी शुरुआत दी। दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ अपने आखिरी मैच में उन्होंने रिटायर्ड हर्ट होने से पहले 19 गेंदों पर 31 रन बनाए। वह सुपर ओवर में भी बल्लेबाजी करने नहीं लौटे। सैमसन की अनुपस्थिति में 14 वर्षीय वैभव सूर्यवंशी को बेंगलुरु में यशस्वी जायसवाल के साथ ओपनिंग करते देखा जाएगा।

साई सुदर्शन ने निकोलस पूरन को पछाड़ कर ऑरेंज कैप पर किया कब्जा

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 की ऑरेंज कैप की दौड़ में आए दिन बदलाव हो रहा है। अब गुजरात टाइटंस के साई सुदर्शन एक बार फिर ऑरेंज कैप के हकदार बन गए हैं। उन्होंने केकेआर के खिलाफ मैच में 52 रन की पारी खेल ये मुकाम हासिल किया है।

दरअसल, केकेआ बनाम गुजरात मैच से पहले सुदर्शन ने 365 रन बना लिए थे। केकेआर के खिलाफ मैच में 4 रन बनाते ही वो आईपीएल 2025 में सबसे ज्यादा रन बनाने के मामले में निकोलस पूरन से आगे निकल गए थे।

साई सुदर्शन ने कोलकाता के खिलाफ मैच में 36 गेंदों में 52 रन की पारी खेली, जिससे मौजूदा सीज में उनके कुल रन 417 हो गए हैं, वो इस मामले में निकोलस पूरन से 49 रन आगे निकल गए हैं। सुदर्शन ना केवल 52 के बेहतरीन औसत से बल्लेबाजी कर रहे हैं बल्कि

उनका स्ट्राइक रेट भी 152 से ज्यादा है। सुदर्शन की लाजवाब फॉर्म का अंदाजा इसी बात सेलगाया जा सकता है कि वो अब तक 8 पारियों में पांच बार फिफ्टी लगा चुके हैं। इसके साथ ही साई सुदर्शन आईपीएल 2025 में 400 रन का आकंड़ा छूने वाले पहले खिलाड़ी बन गए हैं। मौजूदा समय में खेली 8 पारियों में सिर्फ एक मौके पर सुदर्शन 10 से कम के स्कोर पर आउट हुए थे। सुदर्शन की गजब की फॉर्म को देखते हुए साफ संकेत मिल रहा है कि वो अगले 2-3 मैचों में अपने आईपीएल 2024 के रनों की संख्या को पीछे छोड़ देंगे। बता दें कि, सुदर्शन ने पिछले सीजन 12 पारियों में 527 रन बनाए थे।

आरटीओ की उड़नदस्ता वाहन के मुखिया बने पप्पू और यादव

पप्पू-यादव की जोड़ी ने सूबे में मचाया कोहराम

लाखों में महीने की करते है सेटिंग ऊपर तक की डीलिंग में बना रहे सांठ गांठ

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। आरटीओ यानी परिवहन स्क्रायड का उड़नदस्ता वाहन इन दिनों शहर के बाईपास सड़क से गुजर रही हाईवा वाहनों के लिए आतंक का पर्याय बना हुआ है जहां रीवा से लेकर सोहागी तक इधर मऊगंज तथा हनुमना तक के लिए निकलने वाले हाईवा वाहनों को रोककर उड़नदस्ता की टीम चालानी कार्यवाही कर रही मगर उड़नदस्ता वाहन की जिस टीम के द्वारा वाहनों को रोककर उसकी चलानी पर्ची काटी जा रही है उस वाहन में आरटीओ विभाग का कोई भी जिम्मेदार व्यक्ति सवार नहीं रहता और पप्पू तथा यादव नाम के 2 व्यक्तियों के द्वारा वाहनों से मैनेजमेंट बनाकर औने पौने दाम की सेटिंग बनाई जाती है। वहीं अगर कोई वाहन चालक उनकी सेटिंग में फिक्स नहीं होता तो फिर उसे चलानी कार्यवाही का डर दिखाया जाता है उसमें भी गोलमाल करके बिना प्रमाणित पर्ची को काटकर हजारों रुपए ऐंठे जाते हैं जिसमें पप्पू और यादव साहब लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

दरअसल आरटीओ की जिस उड़नदस्ता वाहन का जिक्र हम कर रहे हैं उस वाहन के कुल मुखिया ही यही दोनों व्यक्ति हैं जिनकी मौजूदगी में ही उड़नदस्ता वाहन में सवार 2 मुंशी स्तर के कर्मचारियों के द्वारा अपने प्रभाव और वर्दी को दिखाकर पहले तो वाहनों को रोका जाता है तथा बाद में आगे की डीलिंग के लिए पप्पू और यादव नाम के दोनों प्रायवेट दलालों को आगे कर दिया जाता है जो वाहनों से बिना पर्ची के ही सांठ गांठ करने का काम करते है और कोई भी वाहन चालक मैनेजमेंट के लिए तैयार नहीं हुआ तो पप्पू, यादव साहब लोग चलानी पर्ची का डर दिखाकर लोगों से पैसे ऐंठ लेते हैं।

बताया जा रहा है कि पप्पू साहब के साथ ही यादव जी आरटीओ की उड़नदस्ता वाहन के मैनेजमेंट से महीनों की लाखों रुपए की कमाई कर रहे हैं जिसे देखने वाला कोई भी अधिकारी नहीं है तथा उनके ही द्वारा रोज की लाई गई रकम से बड़े साहब की तनख्वाह का भी हिस्सा मिलता है जिसके बाद सभी कर्मचारी घर को रवाना हो जाते हैं। ट्रक मालिकों की मानें तो इन साहब लोगों ने अपनी सेटिंग में सड़क पर चलने वाली वाहनों के लिए 5000 रुपए का रेट फिक्स किया है अगर उनके द्वारा फिक्स किए गए रेट में कोई ऊंच-नीच हो गई तो फिर वाहन मालिक को सीधे अप्रमाणित पर्ची से होकर ही गुजरना होगा जिसकी राशि फिर 10 हजार के ऊपर चली जाती है।

आपको बता दें पप्पू तथा यादव साहब लोगों की यह सेटिंग किसी गैर नियम के साथ चलने वाले वाहनों के लिए नहीं है उन्होंने तो प्रत्येक वाहनों के लिए ही अपना दाम फिक्स किया हुआ है फिर चाहे वाहन नियम से चले या बिना नियम।

आरोपी को पकड़ने पुलिस बनी बाराती, नाचते-गाते किया गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा पुलिस फरार चल रहे रेप के आरोपी को पकड़ने के लिए सिविल ड्रेस में बाराती बनकर बारात में शामिल हुई और फिर बारातियों की तरह नाचते-गाते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। दरअसल रेप के आरोपी को पकड़ने के लिए रीवा पुलिस का यह नवाचार सीधी के रामपुर नैकिन में देखने को मिला। दरअसल सेमरिया थाना क्षेत्र में रहने वाली नाबालिक किशोरी के साथ चार माह पूर्व झड़वार गांव निवासी विनीत बुनकर के द्वारा दुष्कर्म की घटना को अंजाम दिया गया था। सेमरिया थाना पुलिस ने पॉक्सो एक्ट सहित विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज किया और आरोपी की तलाश कर रही थी। पुलिस को मुखबिर और साइबर की मदद से जानकारी मिली कि आरोपी पुणे और मुंबई में फरारी काट रहा है। लेकिन बीते दिनों 20 अप्रैल को एक बार फिर पुलिस के रडार में आरोपी का लोकेशन आ गया। इस बार रीवा से सटे सीधी जिले में स्थित रामपुर नैकिन में आरोपी के होने की सूचना पुलिस को मिली। जिसके बाद पुलिस ने जल बिछाकर उसे पकड़ लिया। पुलिस ने आरोपी को कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया।

ट्रेन से चोरी करने वाला रीवा का बदमाश सतना में गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। सतना जीआरपी पुलिस ने ट्रेन में चोरी करने वाले एक शातिर को गिरफ्तार किया है। रीवा जिले के सेमरिया का रहने वाला 26 वर्षीय पंकज तिवारी ट्रेन यात्रियों के मोबाइल, बैग और पर्स चुराता था। आरोपी से पुलिस ने 2 लाख 59 हजार रुपए कीमत के सोने-चांदी के गहने और मोबाइल फोन बरामद किए हैं।

जीआरपी प्रभारी राजेश राज ने बताया कि यह मामला 3 अक्टूबर 2023 का है। चित्रकूट जिले के किहूनिया गांव की रहने वाली 28 वर्षीय पूजा चतुर्वेदी सतना से मानिकपुर जा रही थी। वह मेमो ट्रेन में प्लेटफॉर्म नंबर 3 पर बैठी और अपना लाल रंग का पर्स सीट पर रख दिया।

पर्स में सोने की अंगूठी, मंगलसूत्र, बिछिया, चंद्रमा हार, चांदी की पायल, संतान सात की चूड़ी और मोबाइल था। किसी अज्ञात व्यक्ति ने यह पर्स चुरा लिया। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज और मुखबिरों की सूचना के आधार पर सोमवार को आरोपी को पकड़ा। पूछताछ में उसने अपना जुर्म कबूल कर लिया और चोरी का सामान बरामद करा दिया। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है।

संघ लोक सेवा आयोग के क्षितिज में चमके रीवा के दो सितारे

रोमिल ने 27वीं तथा शुभम ने 116वीं रैंक के साथ यूपीएससी में पाई सफलता

विन्ध्य के दो युवाओं की प्रतिभा और परिश्रम ने यूपीएससी में बिखेरी सफलता की चमक

रोमिल द्विवेदी

शुभम शुक्ला

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। संघ लोक सेवा आयोग की सिविल सेवा सर्विसेज का अंतिम परिणाम आज घोषित कर दिया गया। इसमें विभिन्न संवर्गों में युवाओं का चयन हुआ है। रीवा के रोमिल द्विवेदी ने 27वीं रैंक तथा शुभम शुक्ला ने 116वीं रैंक के साथ यूपीएससी में सफलता पाई है। दोनों की प्रारंभिक शिक्षा रीवा में ही संपन्न हुई है। संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा के क्षितिज पर रीवा के दो सितारे चमक रहे हैं। विन्ध्य के दो युवाओं ने अपनी प्रतिभा, लगन और परिश्रम से यूपीएससी की परीक्षा में सफलता की चमक बिखेरी है।

रोमिल द्विवेदी - रोमिल द्विवेदी ने यूपीएससी की परीक्षा में 27वीं रैंक प्राप्त की है। रोमिल को पिछले वर्ष भी यूपीएससी में सफलता मिली थी। वर्तमान में रोमिल इंडियन रेलवे में कार्यरत हैं। रोमिल के पिता श्री केके द्विवेदी उपायुक्त सहकारिता के पद पर वर्तमान में भोपाल में कार्यरत हैं। उनकी माता श्रीमती आशा द्विवेदी गृहणी हैं। उनके चाचा श्री प्रकाश द्विवेदी संभागीय पेंशन कार्यालय में सहायक संचालक के पद पर कार्यरत हैं। रोमिल का परिवार मूल रूप से रीवा जिले के जवा तहसील के पुरौना गांव का निवासी है। रीवा में बोदाबाग में भी उनका पारिवारिक आवास है। रोमिल बचपन से ही प्रतिभाशाली थे। उनके चाचा श्री प्रकाश द्विवेदी ने बताया कि रोमिल की प्रारंभिक शिक्षा बाल भारती स्कूल में हुई। उन्होंने शेष स्कूली शिक्षा डीपीएस भोपाल से पूरी की। इसके बाद रोमिल ने मेनिट भोपाल से बीटेक की उपाधि प्राप्त की। उनके पिता श्री केके द्विवेदी ने बताया कि रोमिल ने किसी कोचिंग संस्थान से प्रशिक्षण नहीं लिया। उन्होंने स्वयं ही यूपीएससी की परीक्षा की तैयारी की।

शुभम शुक्ला - शुभम शुक्ला ने यूपीएससी में 116वीं रैंक के साथ सफलता प्राप्त की है। शुभम वर्तमान में भारतीय खेल विकास प्राधिकरण में सहायक संचालक के पद पर कार्यरत हैं। शुभम का परिवार रीवा में उर्रहट मोहल्ले में निवासरत है। शुभम के पिता श्री अजय शुक्ला व्यवसायी हैं तथा उनकी माता श्रीमती संगीता शुक्ला गृहणी हैं। शुभम की भी प्रारंभिक शिक्षा बाल भारती स्कूल रीवा से हुई है। इसके बाद उन्होंने आईईटी डीएव्हीव्ही इंदौर से सिविल इंजीनियरिंग में बीई की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने दिल्ली में रहकर यूपीएससी की तैयारी की। उनके पिता अजय शुक्ला ने बताया कि शुभम स्कूली शिक्षा के दौरान भी टापर रहे। उनके दादा उसे सिविल इंजीनियर बनाना चाहते थे। शुभम की शुरू से ही रूचि सिविल सर्विसेज में थी। शुभम की बहन शिवानी ने बताया कि शुभम ने इंजीनियरिंग की पढ़ाई के दौरान ही यूपीएससी की तैयारी शुरू कर दी थी। उसके मित्र हर्षवर्धन सिंह का बहुत सहयोग रहा। शुभम की सफलता से पूरा परिवार बहुत खुश है। उनके मित्र तथा वर्तमान में उमरिया में जनसंपर्क अधिकारी अरूणेन्द्र सिंह ने बताया कि शुभम शुक्ला ने यूपीएससी की मुख्य परीक्षा में चार बार सफलता प्राप्त की। उन्हें तीन बार साक्षात्कार में भी सफलता मिली। अपने अंतिम प्रयास में उनका 116वीं रैंक के साथ चयन हुआ है। शुभम अपनी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता और दीदी शिवानी शुक्ला को दिया है। यूपीएससी की तैयारी में शुभम को सबसे अधिक सहायता और सहयोग श्री हर्षवर्धन सिंह से मिला। हर्षवर्धन का दो वर्ष पूर्व भारतीय पुलिस सेवा में चयन हुआ। उनके पिता रीवा में संयुक्त कलेक्टर थे। हर्षवर्धन अपना विभागीय प्रशिक्षण पूरा करने के बाद कर्नाटक में पदस्थापना स्थल में नवीन पदभार ग्रहण करने जा रहे थे। दुर्भाग्य से सड़क दुर्घटना में उनकी दुखद मौत हो गई थी। अरूणेन्द्र सिंह ने बताया कि शुभम शुरू से ही प्रशासनिक अधिकारी बनने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दृढ़ संकल्प से प्रयास कर रहे थे। उनके संकल्प को अंततः सफलता मिल गई है। श्री सिंह ने इस सफलता के लिए शुभम को बधाई दी है।

रेत लेने पर युवक को बंधक बनाकर पीटा, गाड़ी में तोड़फोड़

मीडिया ऑडीटर, मैहर (निप्र)। मैहर में सोमवार देर रात कुछ लोगों ने रेत लेने आए युवक को बंधक बना लिया और जमकर मारपीट कर दी। दरअसल, युवक हार्डवेयर की दुकान के सामने से रेत भर रहा था इसी दौरान उसे पकड़ लिया।जानकारी के मुताबिक पवन बुनकर नाम का युवक एक शादी समारोह में बर्फ गोले का काम कर रहा था। रात करीब 10 बजे उसके साथी विपिन सोनी ने उसे बर्फ रखने के लिए रेत लाने भेजा। पवन सुनील ट्रेडर्स के पास सड़क किनारे से रेत भर रहा था। इसी दौरान दीपांशु गुप्ता, हिमांशु गुप्ता और प्रांशु अपने साथियों के साथ वहां पहुंच गए।

आरोपियों ने पवन की पिटाई की और उसे रस्सी से बांध दिया। पवन के वापस न लौटने पर विपिन कार से खोजने निकला। रास्ते में पवन मिला, विपिन ने जैसे ही गाड़ी रोकी, आरोपियों ने उसके साथ भी मारपीट की और गाड़ी में भी तोड़फोड़ की।

मंगलवार सुबह आरोपियों ने पिटाई का वीडियो सोशल मीडिया पर पोस्ट कर दिया। पीड़ित युवकों की शिकायत पर मैहर कोतवाली पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। कोतवाली टीआई अनिमेष द्विवेदी ने बताया कि पुलिस मामले की जांच कर रही है।

मैहर में दंडवत प्रणाम करते हुए जनसुनवाई में पहुंचे किसान

मीडिया ऑडीटर, मैहर (निप्र)। मंगलवार को रामनगर से सिंघाड़ा किसान दंडवत करते हुए कलेक्टर कार्यालय पहुंचे। जहां उन्होंने प्रशासन पर वादाखिलाफी का आरोप लगाते हुए विरोध प्रदर्शन किया। किसानों के इस अनोखे विरोध को देखकर प्रशासनिक अधिकारी हैरान रह गए। अधिकारियों ने तुरंत किसानों से बात की और जल्द मदद का आश्वासन दिया।

दरअसल रामनगर में किसानों की सिंघाड़े की फसल पिछले बरसात के मौसम में बीमारी से नष्ट हो गई थी। जिला प्रशासन ने सर्वे कर सहायता का आश्वासन दिया था। एक साल बीत जाने के बाद भी किसानों को कोई मदद नहीं मिली। जिससे नाराज किसानों ने आज कलेक्टर कार्यालय में विरोध प्रदर्शन किया।

मैहर के एडीएम शैलेन्द्र सिंह ने बताया कि राजस्व पुस्तक परिपत्र में सिंघाड़े की फसल क्षतिपूर्ति सूची में शामिल नहीं है। इस वजह से मुआवजा नहीं दिया जा सका। प्रशासन ने राज्य सरकार को पत्र लिखा है। मंजूरी मिलते ही किसानों की मदद की जाएगी

रिटायर्ड फौजी रिश्वत देने कैश और ज्वैलरी से भरी अटैची लेकर पहुंचा

कलेक्ट्रेट के गेट पर लगाया बैठका

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले के तहसील और कलेक्ट्रेट कार्यालय में काम ना होने से परेशान एक रिटायर्ड फौजी कैश और ज्वैलरी से भरी अटैची लेकर कलेक्टेट कार्यालय पहुंचा। अटैची के ऊपर लिखा हुआ था रिश्वत का बजट। अटैचीमें नोटों की गड्डियां और सोने के जेवरात रखे थे जिसे लेकर रिटायर्ड फौजी कलेक्टेट के दरवाजे पर बैठा हुआ था।

यहां रिटायर्ड फौजी काम के बदले रिश्वत देने का खुला ऑफर दे रहा था लेकिन अधिकारी और कर्मचारी उसे देखकर कतराते नजर आए। दरअसल पीड़ित रिटायर्ड फौजी का आरोप है कि उसकी खुद की जमीन पर सरहंगों ने कब्जा कर लिया है और अब उसकी जमीन से रास्ता निकाल लिया जमीन को खाली कराने के लिए उसने त्योंथर एसडीएम कार्यालय में कई बार आवेदन दिया लेकिन उसका काम नहीं हुआ फरियादी योगेश कुमार तिवारी मलपार त्यौथर का निवासी है। जिसके सभी भाई फौज में हैं। फरियादी का आरोप है कि पैसे लेकर अधिकारी सरहंगों के पक्ष में काम कर रहे हैं। इसलिए वह आज अपने घर से सारे रुपए और जेवर लेकर रीवा के कलेक्टेट कार्यालय पहुंचा।

कलेक्टर ने 79 आवेदकों की समस्यायें सुनीं और विभाग प्रमुख को उपस्थित रहने के दिये निर्देश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)।कलेक्ट्रेट में आयोजित साप्ताहिक जनसुनवाई में कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने 79 आवेदकों की समस्यायें सुनीं। राजस्व, ग्रामीण विकास, शिक्षा सहित अन्य विभागों से संबंधित आवेदनों को कलेक्टर ने विभागीय अधिकारियों को कार्यवाही किये जाने हेतु निर्देशित किया। कलेक्टर ने निर्देश दिये कि जनसुनवाई में विभागीय प्रमुख अनिवार्यतः उपस्थित रहें उनके प्रतिनिधि मान्य नहीं होंगे। कलेक्टर ने विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि आवेदनों पर समाधानकारक कार्यवाही किया जाना सुनिश्चित करें।

जनसुनवाई में अनूप तिवारी ने रघुराज सागर तालाब को अतिक्रमण मुक्त करने का आवेदन दिया। कलेक्टर ने तहसीलदार हुजूर को निरीक्षण कर कार्यवाही करने के निर्देश दिये। नवल किशोर मिश्रा मगुरहाई निवासी के सीमांकन करने, अमित पटेल चन्द्रपुर निवासी ने पहुंचमार्ग से अतिक्रमण हटाने तथा अर्जुन नगर निवासी आरिफ खान के सीमांकन कराने के आवेदनों पर संबंधित तहसीलदार को कार्यवाही करने के निर्देश दिये। रायपुर कचुलियान अन्तर्गत पटना के रामकृपाल एवं सगरा के सूबेलाल कोल ने मार्ग से अतिक्रमण हटाने तथा आदिवासी बस्ती करहिया नं. 2 के निवासियों ने आम रास्ता को खोले जाने के आवेदन पर तत्काल कार्यवाही करने के निर्देश संबंधित तहसीलदारों को दिये।

कलेक्ट्रेट में आयोजित जनसुनवाई में सेमरिया अन्तर्गत बरहा के निवासियों ने पेयजल व्यवस्था कराने तथा हरिजन बस्ती भटिगवां के निवासियों ने हैण्डपंप को अतिक्रमण से मुक्त कराने का आवेदन दिया। कलेक्टर द्वारा संबंधित तहसीलदार को कार्यवाही हेतु निर्देशित किया गया। जनसुनवाई में अमिलकी के किसानों ने अग्नि से क्षतिग्रस्त गेंहू की फसल का मुआवजा देने का आवेदन दिया जिसे तहसीलदार हुजूर को कार्यवाही हेतु प्रेषित किया गया। इसी प्रकार रूचि साकेत भटिगवां के साइकिल व छात्रवृत्ति दिलाये जाने के आवेदन को जिला शिक्षा अधिकारी को, बक्षेरा के कमलेश तिवारी के नल जल योजना से जल प्रदाय किये जाने के आवेदन को जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी को, शिवाकांत तिवारी लौरी नं. 2 के नक्शा तरमीम करने के आवेदन को नायब तहसीलदार गुढ़ को कार्यवाही किये जाने हेतु कलेक्टर द्वारा निर्देशित किया गया। पुनीत पाठक मढ़ा परासी कल्पना पाण्डेय खैरी-2 के बिजली बिल के सुधार के आवेदनों पर विद्युत विभाग को कार्यवाही करने के निर्देश दिये गये। इस दौरान अपर कलेक्टर श्रीमती सपना त्रिपाठी, संयुक्त कलेक्टर पीके पाण्डेय व संयुक्त कलेक्टर श्रेयस गोखले ने भी आवेदकों की समस्यायें सुनीं।

सुपर स्पेशलिटी अस्पताल में अंगदान के लिए किया गया समिति का गठन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। सुपर स्पेशलिटी अस्पताल रीवा जटिल रोगों के उपचार का केन्द्र बनने के साथ अंग प्रत्यारोपण केन्द्र के रूप में भी विकसित हो रहा है। पिछले एक साल में इस अस्पताल में 6 किड़नी प्रत्यारोपण के सफल आपरेशन किये गये। इन सभी में जिन रोगियों में किड़नी का प्रत्यारोपण किया गया। उन्हें परिवारजनों से ही किड़नी प्राप्त हुई थी। यदि कोई व्यक्ति ब्रोन डेथ हो जाये तो उसके शेष अंग काफी समय तक सक्रिय अवस्था में रहकर कार्य करते रहते हैं। ऐसे व्यक्ति के अंगों का भी जरूरतमंद रोगियों को प्रत्यारोपण किया जा सकता है। इसके लिए सुपर स्पेशलिटी अस्पताल में चार डॉक्टरों की समिति का गठन किया गया है। समिति में डॉ. आलोक प्रताप सिंह, डॉ. रंजीत झा, डॉ. नितिन पाण्डेय तथा डॉ. अक्षय श्रीवास्तव को शामिल किया गया है। इस संबंध में अस्पताल के अधीक्षक डॉ. अक्षय श्रीवास्तव ने बताया कि समिति के गठन का मुख्य उद्देश्य केडवरिक अंग प्रत्यारोपण को प्रोत्साहित करना है। इसके माध्यम से किसी एक ब्रोन डेथ व्यक्ति के विभिन्न अंगों का कई रोगियों को प्रत्यारोपण किया जा सकता है। डॉ. श्रीवास्तव ने आमजनता से रोगियों की जान बचाने के लिए अंगदान करने का संकल्प लेने की अपील की है।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।